ज्ञानामृत

नवम्बर, 1982
वर्ष 18 ❋ अंक 5
मूल्य 1.25

मोदी नगर में हुए आध्यात्मिक मेले के अवसर पर एक वकतृत्व स्पर्धा रखी गई। ब्र० कु० प्रकाश मणि जी प्रवचन करती हुई। मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० गीता (भादनगर) मेरठ विश्व विद्यालय के उपकुलपति जी, ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा जी तथा मोहनी जी विराजमान हैं।

इन्दौर में कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्माक ट्रस्ट द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित "स्त्री शक्ति जागरण" परिसंवाद में सभा को सम्बोधित करती हुई बु० कु० आरती जी। मंच पर (बाएं से) मृणाली देसाई (ट्रस्टी), मणि बहन पटेल (सपुत्री भारत के पूर्व गृहमन्त्री वल्लभ भाई पटेल), लक्ष्मी मेनन (अध्यक्षा ट्रस्ट) एवं मृणाली गोरे बैठी हैं।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल भ्राता बेनर्जी जी कुल्लू दशहरा मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

मुख पृष्ठ से सम्बन्धित

1. मोदी नगर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करती हुई ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय। उनका साथ दे रही हैं ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी, गायत्री मोदी जी, तथा अन्य।
2. बंगलोर में ब्र० कु० हृदयपुष्पा जी भ्राता जत्ती, भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति से ज्ञान वार्त्ता करते हुए। ब्र० कु० चन्द्रमणि जी साथ में हैं।
3. मोदी नगर में आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन समारोह में अपने उद्गार प्रकट करते हुए भ्राता के.एन. मोदी जी। मंच पर (दाएं से) ब्र० कु० प्रकाशमणि जी, श्रीमति के. एन. मोदी जी, ब्र० कु० निर्वैर जी तथा ब्र० कु० ब्रिजमोहन जी उपस्थित हैं।
4. न्युयार्क में दादी जानकी, ब्र० कु० मोहिनी जी, जयन्ती जी, राबर्ट मुलर सहायक महासचिव एकोसाक, यू०. एन०. को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।
5. आबू पर्वत पर 1983 में होने वाले विश्व शान्ति महासम्मेलन के उपलक्ष्य में इन्दौर में आयोजित प्रैस कान्फ्रैन्स को सम्बोधित करते हुए भ्राता व्ही० आर० कृष्णा अय्यर जी, साथ में ब्र० कु० ओमप्रकाश जी तथा आरती जी हैं।

न्युयार्क में भारत दिवस परेड के अवसर पर निकाली गई झांकी "प्राचीन भारत स्वर्ग भूमि" को हजारों लोगों ने देखा।

पूना में मुख्य व्यक्तियों का स्नेह मिलन रखा गया चित्र में जिला परिषद के अध्यक्ष बाबू राव ढमढेर, ब्र० कु० उर्मिल तथा अन्य बहन भाई दिखाई दे रहे हैं।

बोकारो में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता डी० के० प्रसाद (L.D.R.C.) द्वारा सम्पन्न हुआ। चित्र में एस० टी० ओ० भ्राता जयसवाल जी तथा ब्र० कु० कुसम तथा अंजु जी साथ में हैं।

लखनाऊ में हुए सर्वधर्म मिलन समारोह में ब्र० कु० भगवती जी के साथ अन्य धर्मों के मुख्य मंच पर शिव बाबा की याद में बैठे हैं।

विजयवाड़ा सेवा केन्द्र द्वारा चिराला में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन म्युन्सीपल चेयरमैन तुला बादुला व्यकय्या द्वारा सम्पन्न हुआ। साथ में ब्र० कु० बहन भाई खड़े हैं

Regd. No. D (E)-70

नागपुर में हुए विश्व शान्ति सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण करती हुई, पूर्वी क्षेत्र की प्रशासिका ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी ।

दादी जानकी जी ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय की ओर से बहन इन्गा थारसन को शान्ति पुरस्कार भेंट करती हुई ।

थुरल में हिमाचल प्रदेश के शिक्षा मन्त्री भ्राता संतराम जी को ईश्वरीय साहित्य भेंट करती हुई ब्र०कु० प्रेम जी, सुदेश जी तथा अन्य ।

केलांग (हि० प्र०) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी में जनरल मेनेजर इन्डस्ट्रीज पधारे। ब्र० कु० भाई बहन उनके साथ खड़े हैं ।

नेरोबी में प्रो० जोहन पीसा I ब्र० कु० वेदान्ती जी को नए राजयोग हाल की चाबी देते हुए। वेदान्ती जी ने इस का उद्घाटन किया। भ्राता हरषाद, ब्र० कु० भगवती जी तथा न्यायाधीश वी० वी० पटेल साथ में खड़े हैं।

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय		पृष्ठ	क्र० सं०	विषय		पृष्ठ
१.	आओ, सच्ची दीवाली मनाएं	...	१	१०.	एक बार फिर दीप जले	(कविता) ...	१६
२.	मुरली और ईश्वरीय महावाक्य (सम्पादकीय)	...	२	११.	आदर्श जीवन	...	१७
३.	हाथ लगे न कौड़ी	(कविता) ...	५	१२.	सच्ची दीपावली	...	२०
४.	ईश्वरीय नशा और स्थिति	...	६	१३.	नारी की आवाज़	...	२२
५.	शिव ही सत्य है	...	९	१४.	सादगी	(कविता) ...	२५
६.	अभी-अभी	(कविता) ...	१०	१५.	लास्ट सो फ़ास्ट	...	२६
७.	उन्होंने कहा था	(एकांकी) ...	११	१६.	तीसरे नेत्र की करामात	...	२७
८.	एक लाख की एक बात	...	१३	१७.	सूर्यमुखी	...	२८
९.	८४ साल बनाम ८४ जन्म	...	१५	१८.	आध्यात्मिक सेवा-समाचार	...	३०

आओ, सच्ची दीवाली मनायें

५००० वर्ष पूर्व एक अति श्रेष्ठ समय था जबकि इस सृष्टि पर, धरा को जगमग करने के लिए परम ज्योति निराकार परमात्मा का अवतरण हुआ था। वह समय कलियुग के अन्त का था। जब परमात्मा ने सत्य ज्ञान देकर सभी मनुष्यों की बुझी आत्म-ज्योति जगाई थी। तब मनुष्यात्माओं का अपने परमपिता से मिलन हुआ था। वह इस सृष्टि-चक्र की सबसे शुभ-बेला थी। वही सच्ची दीवाली थी। बाद में तो मात्र उसकी यादगार ही है।

अब हर वर्ष यादगार रूप में दीवाली मनाते युग बीत गये। न लक्ष्मी आई, न ज्योति जगी। अब समय है—जबकि परमपिता परमात्मा स्वयं ज्ञान-घृत द्वारा मनुष्यात्माओं की ज्योति जगा रहे हैं—तो हम सभी का आह्वान करते हैं कि आओ, हम सभी मनुष्य सत्य परमात्मा से सत्य ज्ञान लेकर अपने जीवन को पावन बनायें, अर्थात् ज्योति जगायें और ईश्वरीय मिलन का वास्तविक सुख प्राप्त करें, तब ही यहाँ पृथ्वी पर स्वर्ग आयेगा, जहाँ श्री लक्ष्मी व श्री नारायण का राज्य होगा। जो ऐसी सच्ची दीवाली मनायेंगे, वही स्वर्ग के अधिकारी बनेंगे, जहाँ रोज़ ही दीवाली होगी—

दीवाली आई दीप जलाओ
परमपिता से मिलन मनाओ
संगम के इस पावन युग में
ज्ञान से आत्म-ज्योति जलाओ।

(ज्ञान मुरली से साभार)

वर्तमान संगमयुग पर परम पितापरमात्मा शिव आकर आत्माओं की ज्योति जगा रहे हैं, ऐसी संगमयुगी पावन दीपावली की हार्दिक बधाई

सम्पादकीय

मुरली और ईश्वरीय महावाक्य

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में प्रतिदिन प्रातः काल ईश्वरीय वचनों की जो अभिलिपि 'मुरली' नाम से सुनाई जाती है उसमें प्रायः प्रारम्भ में ही 'भगवानुवाच' अथवा 'शिव भगवानुवाच' शब्द आते हैं। इन्हें पढ़ अथवा सुनकर किसी भी अनभिज्ञ अथवा नव-परिचित व्यक्ति के मन में यह प्रश्न उठता है कि क्या इस अभिलिपि में जो शब्द-पुष्प वाक्यों के रूप में गुंथे हुए हैं, वे सब भगवान के कमल-मुख से पुष्पित और विनिसृत हुए हैं? कुछ जनों को तो यह सोचकर ही आश्चर्य होता है कि भगवान मनुष्यात्माओं के सम्मुख मुखारविन्द से कुछ बोलते भी हैं। वे बार-बार विस्मित अथवा आश्चर्यान्वित होते हैं और गहरे सोच में भी पड़ जाते हैं कि यदि प्रभु इस धरा पर आकर मनुष्यात्माओं के सामने प्रवचन करते हैं तब तो ये संसार की एक मुख्यतम घटना है।

परमात्मा का अवतरण—एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त

इसमें भला सन्देह भी क्या हो सकता है कि परम-पिता परमात्मा का इस पृथ्वी पर आगमन एक ऐसा वृत्तान्त है जिसके महत्त्व को व्यक्त करने के लिए मानवीय शब्द-कोष में कोई युक्त एवं पर्याप्त शब्द ही नहीं हैं। यह वह घटना है जिससे संसार के इति-हास का आरम्भ होता है और जिसके बाद संसार के एक इतिहास-चक्र का अन्त भी होता है। परमात्मा का अवतरण ऐसा अवतरण है जो पृथ्वी को असुरों से मुक्त करके देवताओं के निवास के योग्य बनाता है और संसार के सभी क्लेषों और कष्टों का स्थाई रूप से अन्त करता है। इसलिए इस वृत्तान्त की तुलना में संसार की अन्य सब क्रान्तियाँ तथा सब आविष्कार, सब दर्शन और सब उपाय फीके हैं क्योंकि उन सबसे यह संसार वैसा सुखमय नहीं बना जैसाकि पहले-आदि काल में भगवान ने अपने महावाक्य उच्चारण करके इस सृष्टि को स्वर्ग बनाया था। सच तो यह है कि यह वृत्तान्त इतना तो मूल्यवान एवम् महत्वपूर्ण है कि इसकी सूचना हर सूचना पट पर, हर चौराहे पर, हर समाचार प्रसारण और समाचार पत्र में और हर किताब के हर पन्ने के शीर्ष-स्थान पर अंकित होनी चाहिए ताकि संसार का कोई भी व्यक्ति इससे अनभिज्ञ न रह जाये।

हमने अपने इस छोटे-से जीवन में देखा है कि कुछ लोग किसी परिचित या अपरिचित व्यक्ति को एक पोस्टकार्ड लिख भेजते हैं और उसमें वे कोई ऐसी बात लिख देते हैं जिसके बारे में वे पत्र पाने वाले से निवेदन करते हैं कि वह कम-से-कम सात और व्यक्तियों को वैसा ही पत्र लिख भेजे। परन्तु वास्तव में परमात्मा का अवतरण ही ऐसा वृत्तान्त है और उनकी मुरली के वाक्य ही ऐसे महावाक्य हैं तथा उनकी शिक्षा ही ऐसा महामंत्र है जिसका उल्लेख दूसरों को करके भेजना चाहिए ताकि वे बाद में उला-हना न दे सकें कि उन्हें किसी ने परमात्मा के अवतरण की सूचना ही नहीं दी।

परमात्मा के अवतरण एवं प्रवचन के बारे में मुख्य चार आपत्तियाँ

जैसे कि लेख के प्रारम्भ में भी हमने कहा है, अनभिज्ञ अथवा नव-परिचित लोगों को परमात्मा के अवतरण की बात पढ़कर आश्चर्य होता है। वे सोचते हैं कि (१) क्या सर्वशक्तिमान् परमात्मा किसी मनुष्य के तन में आ सकता है? (२) क्या ज्ञान का असीम भण्डार किसी काया की सीमा में प्रवेश कर सकता है? (३) क्या वह दिव्यता का घनीभूत पुञ्ज किसी मानवीय भाषा में बोल सकता है? (४) क्या वह परमपवित्र प्रभु माया-मोह में पड़े मनुष्यों के सामने विराजमान हो सकता है? उपरोक्त दूसरे प्रश्न के साथ कई लोग यह प्रश्न भी जोड़ देते हैं कि क्या वह परम बुद्धिमान सामान्यतः के स्तर पर उतर कर निरक्षर एवं साक्षर सामान्य जनों के सम्मुख उनके लिए सहज, सुबोध वचनों में उच्चतम जीवन दर्शन, महानतम मन्तव्य तथा श्रेष्ठतम आचार-संहिता का पाठ पढ़ाने का कर्त्तव्य कर सकता है?

परमात्मा की 'आध्यात्मिक' शक्तियों को 'भौतिक' शक्तियों के सदृश्य मानने की भ्रांति

क्या ही अच्छा हो यदि लोग पहले स्वयं से ही यह प्रश्न पूछ लें कि "(१) जबकि परमात्मा सर्वशक्ति-

मान् है, तो क्या वह मनुष्य के तन में नहीं आ सकता? आध्यात्मिक शक्ति की जब हम प्राकृतिक प्रकोप शक्ति जैसे कि भूकम्प, ज्वाला-विस्फोट, परमाणु विस्फोट आदि से तुलना करते हैं, तभी हमारे मन में यह संशय पैदा होता है कि 'सर्वशक्तिमान्' परमात्मा मानवीय तन में कैसे आ सकते हैं।

सभी शक्तियों को व्यक्त मानने की भ्रांति

दूसरी बात यह है कि किसी भी सत्ता की समस्त शक्तियां एक-साथ अभिव्यक्त नहीं हो जाया करती, न ही वे सदा व्यक्त ही रहती हैं बल्कि वे प्रायः तिरोहित (Dormant) अवस्था में अपने अधिष्ठान में रहती हैं। उदाहरण के तौर पर एटम अथवा परमाणु में एक बहुत बड़ी शक्ति है जो कि उसके प्रस्फुटित होने पर व्यक्त होती है, परन्तु सामान्य अवस्था में हमारा शरीर भी तो परमाणुओं ही से बना हुआ है; तब क्या इसमें हम कई एटम बमों-जैसी शक्ति अनुभव करते हैं ? क्या हम यह कह सकते हैं कि इतनी एटॉमिक शक्ति वाले शरीर को हम कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं ? नहीं, कारण यह है कि बहुत-सी शक्तियां तिरोहित हैं। इसी प्रकार, जब पानी को ऊँचाई पर स्थित किसी बांध या डैम (Dam) से गिराया जाता है तो उससे बिजली पैदा होती है परन्तु साधारण अवस्था में तो हम पानी को हाथ में भी ले लेते और पीते भी हैं, तब हम यह नहीं कहते कि इतनी बिजली पैदा करने वाले पानी को हम भला पियेंगे कैसे ? इसी प्रकार, यद्यपि परमात्मा में दिव्य दृष्टि की शक्ति, स्नेह शक्ति, ज्ञान की शक्ति, पवित्रता की शक्ति इत्यादि सर्व आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं तथापि जब परमात्मा मनुष्य शरीर में प्रविष्ट होते हैं तो वे सभी की सभी एक ही समय में, अथवा एक साथ और पूर्ण पराकाष्ठा में व्यक्त नहीं हो जाती बल्कि उनमें से कुछ ही शक्तियाँ, कुछ मात्रा में, कुछ ही पराकाष्ठा में व्यक्त होती हैं। उदाहरण के रूप में यद्यपि माता के स्तनों में दूध अधिक मात्रा में होता है, तथापि वह बच्चे को एक समय में उतना ही देती है जितना वह ग्रहण कर सकता है। इसी प्रकार ज्ञान के सागर एवं सर्वशक्तिमान परमात्मा भी उतना ही ज्ञान और उतनी ही शक्ति देते तथा व्यक्त करते हैं जितना कि मनुष्य ले सकता है।

(२) दूसरे प्रश्न पर भी यदि विचार किया जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि यह भी भ्रान्ति पर आधारित है क्योंकि ज्ञान के विस्तार का सम्बन्ध काया के विस्तार से नहीं है। मनुष्य का मस्तिष्क छोटा-सा है परन्तु वह सारे भू-मण्डल के अनेक रहस्यों को बुद्धि में ग्रहण कर लेता है। टेप या विडियो (Video) का कैसेट छोटा-सा होता है, परन्तु विडियो कैसेट में जो दृश्य भरे होते हैं, उनका वास्तविक विस्तार उससे कई गुना अधिक होता है। मनुष्य के जीव-कोष में जो अनुवंशिकी (Genes) होते हैं—जिनके आधार पर ही उनका शरीर इतना बड़ा बनता है—वे बहुत छोटे होते हैं और उनमें अंकित विकास-संहिता अथवा विकास-निर्देश (Code of Growth) भी अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं। अतः यह प्रश्न कि ज्ञान का असीम सागर एक मानवीय तन की सीमा में कैसे आ सकता है, तब उठता है जब वह 'सागर' शब्द से अपने सामने किसी जल सागर (जैसे कि प्रशान्त महासागर) को सामने लाकर 'ज्ञान सागर' को भी वैसा ही समझ लेता है।

ज्ञान का सागर होते हुए भी अल्प बुद्धि मानवों को समझाना प्रशंसनीय

(३) फिर, कुछ लोग जो यह आपत्ति उठाते हैं कि परमात्मा तो दिव्यता का घनीभूत रूप है, वह मानवीय भाषा में, जिसे कि मनुष्य समझ सकें, कैसे बोल सकता है, वे अपने ही तर्क पर गहराई से विचार नहीं करते। यदि कोई पी० एच० डी० की उपाधि-प्राप्त अध्यापक किंडर गार्टन के विद्यार्थियों को पढ़ाता है तो क्या हम इस बात को असम्भव मानते हैं। नहीं, बल्कि हम उस अध्यापक की कुशलता की प्रशंसा अवश्य करते हैं कि वह विद्या का एक भंडार होते हुए भी स्वयं को बच्चों के स्तर पर लाकर इतनी सरलता से पढ़ाता है कि अल्प बुद्धि एवं अविकसित मस्तिष्क वाले शिशु भी उसकी बातों को समझ लेते हैं। अध्यापक की ऐसी कुशलता तो वास्तव में इस बात की प्रतीक है कि अध्यापक केवल विद्वान ही नहीं

बल्कि व्यावहारिक (Practical) भी है और बच्चों के मनोविज्ञान (Child Psychology) में भी पारंगत है। इसी प्रकार दिव्यता का पुंज होते हुए भी अज्ञानी मनुष्यों के सामने एक उच्च दार्शनिकता का पाठ प्रस्तुत करने की कला का होना तो वास्तव में परमात्मा की सर्वांगीण सामर्थ्य, अतिशय करुणा और मानवी मनोविज्ञान पर उसका पूरा अधिकार होने का प्रतीक है। यह असम्भव नहीं है बल्कि प्रशंसनीय है।

सरल मानवी भाषा में भावाभिव्यक्ति कृपाशीलता और प्रतिभा का प्रतीक

तर्क की चाल सीधी भी हो सकती है, टेढ़ी भी होती है। हमने देखा है कि एक ओर तो लोग कहते हैं कि दिव्य स्वरूप परमात्मा मानवी भाषा में कैसे बोल सकता है और दूसरी ओर जब वे उसके वचन-संग्रह को मानवी भाषा में अभिव्यन्जित पाते हैं तो वे कहते हैं कि क्या परमात्मा की भाषा ऐसी (मानवी) होती है! वे यह नहीं सोचते कि यह परमात्मा की कृपाशीलता है और कुशलता है कि वे श्रेष्ठ एवं जटिलतम ज्ञान को ऐसी सरल भाषा में बोलते हैं कि जिसे मनुष्य सहज ही समझ सके और जिसके भावानुवाद में उसे कठिनाई अनुभव न हो। साँसारिक व्यवहार में जब हम किसी व्यक्ति को अपनी मातृ अथवा देशीय भाषा के अतिरिक्त किसी दूसरी भाषा में बोलते हुए सुनते हैं तो हम यह उस व्यक्ति की विशेषता मानते हैं कि वह एक के बजाय दो या तीन या अधिक भाषाएँ जानता है। अतः दिव्यता के सागर परमात्मा को मानवी भाषा में ही अपने भाव मुखरित करते हुए सुनकर तो हमारे मन में प्रशंसा-वृत्ति का उद्रेक होना चाहिए कि परमात्मा इस कला से भी सम्पन्न हैं।

क्या परमपवित्र परमात्मा पतित आत्माओं के बीच पधारता है?

(४) अब रहा यह आक्षेप कि परम पवित्र परमआत्मा पतित मनुष्यों के सामने कैसे विराजमान हो सकता है? इस विषय में वास्तव में मनुष्यों को यह सोचने की ज़रूरत है कि "क्या स्वास्थ्यवान डाक्टर किसी रोगी के पास नहीं जाता? क्या एक स्वच्छ माता स्नेह और वात्सल्य के भाव से अभिभूत होकर अपने ललना को अपने हाथों में लेकर उसे स्वच्छ बनाने का कर्तव्य नहीं करती? क्या एक समाज-सुधारक गाँवों की मिट्टी को झेलता हुआ वहाँ के मैले कुचैले लोगों के बीच उपस्थित होकर अपना सुधार-कार्य नहीं करता? क्या आकाश अपने निर्मल जल को मिट्टी से सनी हुई पृथ्वी के पास प्यास बुझाने नहीं भेजता?" इसी प्रकार, परमात्मा भी मनुष्यात्माओं का माता-पिता, विकारों से रुग्ण आत्मा का वैद्य, अशान्त आत्माओं की शान्ति-पिपासा को तृप्त करने वाला अमृत-मेघ और समूची मानवी सृष्टि का सुधार करने वाला विश्व-परिवर्तक है; क्या उसे वात्सल्य, करुणा, सुधार भाव, सेवा-वृत्ति आदि प्लावित नहीं करते कि वह पतित आत्माओं को पावन करने का ईश्वरीय कार्य, जिसके कारण ही लोग उसे 'पतित पावन' कहते हैं, करे?

परमात्मा के अवतरण की बात न्याय-संगत

सच तो यह है कि आज मनुष्य इतना पतित हो चुका है और आज संसार में इतना भ्रष्टाचार, पापाचार, मनोविकार और हाहाकार है कि स्वयं परमआत्मा के आकर इसे सुधारे बिना दूसरा कोई चारा ही नहीं। इतनी घोर अनैतिकता का सामना तो नैतिकता का पहाड़ केवल परमात्मा ही कर सकता है। कोई भी मनुष्य तो पाप से छूटा ही नहीं जो दूसरे को निर्विकार बनाने की बात भी छाती ठोक कर कह सके। तब भी यदि परमात्मा न आये तो फिर क्या हो!

आज मनुष्य के हाथ में इतनी जबरदस्त विध्वंसक तथा आसुरी शक्ति आ चुकी है कि कुछ थोड़े ही व्यक्ति सारे संसार का विनाश कर सकते हैं। यदि अब परमाणु शक्ति से भी अधिक प्रबल रचनात्मक एवम् दिव्य शक्ति का आगमन इस धरा पर न हो तो उसके परिणाम कल्पनातीत ही होंगे। इसलिए स्वयं परमात्मा जो अपनी आध्यात्मिक शक्ति में परमाणु शक्ति के समुच्चय से भी अधिक शक्तिवान है, वे इस पृथ्वी पर पधारते हैं ताकि विकारान्ध मानव की आँखें खोलकर उसे शान्ति की राह दिखायें और विनाशकारी प्रवृत्तियों से उसे निकालकर समझदारी की राह पर चलायें। तो निष्कर्ष

यह हुआ कि पवित्रता की चेतन मूर्ति परमात्मा का पतित मानव के सामने आना असम्भव नहीं बल्कि परमावश्यक है, वाँछनीय है, कल्याणप्रद है, सम्भव है और अनुभव गम्य भी है।

यों उठाने को कई शंकायें, कई प्रश्न, कई आपत्तियाँ उठाई जा सकती हैं परन्तु हमारा स्नेहानुरोध है कि पूछने वाला कोई भी व्यक्ति परमात्मा के स्वरूप का कुछ परिचय प्राप्त करके उनसे विनिसृत प्रभु वचन, जिन्हें हमारे यहाँ मुरली' कहा जाता है, सुनकर, मनन कर और धारण करके तो देख। मुरली स्वतः ही इन सब प्रश्नों का उत्तर देती है। वह भगवान की ऐसी सीधी-सोधी, तेज-तर्रार, ओजस्वी एवं शक्तिशाली वाणी है जो अज्ञान की सारी धुंध को तथा अज्ञान के सारे काले बादलों को छिन्न-भिन्न करके आत्मा के प्रकाश को उजागर करती है। मुरली अमृत भी है और संजीवनी भी, जो एक नया जीवन प्रदान करती है। साथ-साथ वह एक ऐसी तेज धार तलवार भी है अथवा अमोघ वाण भी जो माया-मोह को नष्ट कर देता है। मुरली मनुष्य के सामने एक ऐसी अकाट्य चुनौती है कि वह अपने जर्जर विचारों को बदले, अपनी फटी हालत को सुधारे, अपने मन को धोए, अपने भोंदे विचारों से पल्ला छुड़ाए और अपनी जीवन-पद्धति में परिवर्तन करे। यदि कोई सच्चे दिल से इसका श्रवण और मनन करता है तो वह इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। हमारा यह सन्देश जन-जन को, हर बाल-वृद्ध को है, हर नर-नारी को है, हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सबको है कि वे भगवान के अवतरण रहस्य को समझें और उसके अमृत वचनों—मुरली—से अपने आपको निहाल अथवा मालामाल करें।

—जगदीश

"हाथ लगे न कौड़ी"

ले०—ब्र० कु० रेवादास, विलासपुर (हि० प्र०)

शिव बाबा कहते,
बनो पवित्र !
अन्यथा तो,
पड़ेंगे छित्र !!
बनो योगी,
और ज्ञानी !
तुम करो न,
अब मनमानी !!
पाओ बाबा से,
पूरा तुम अधिकार !
नहीं तो तुमको,
करना पड़ेगा हाहाकार !!

वक्त शीघ्र ही,
है बीता जा रहा !
सामने देखो—विनाश,
नजर है आ रहा !!
पहचानो समय,
संगम भी जा रहा !
उधर देखो,
सतयुग है आ रहा !!
उठो जागो !!,
पहनो दौड़ी !
भागो ! भागो !! अन्यथा,
हाथ लगे न कौड़ी !!

—:o:—

"ईश्वरीय नशा और स्थिति"

लेखक— ब्र० कु० आत्मप्रकाश, मधुबन, आबू

वर्तमान युग समस्या प्रधान युग है ! समस्याओं से उलझा हुआ मानव जीवन रूपी सफर को बहुत कठिन अनुभव करता है। उनकी नज़रें सुख और शान्ति की खोज में चारों ओर घूमती हैं। फलस्वरूप सुख तथा शान्ति को कोसों मील दूर समझकर क्षणिक सुख की प्राप्ति के लिए अल्पकाल के नशे के साधन शराब, बीड़ी, भाँग आदि-आदि का अपने जीवन में प्रयोग करता रहता है। उस सीमित समय तक सुख शान्ति का अनुभव करके अपने को भाग्यशाली समझ कर नाचता है। लेकिन कुछ ही समय के बाद छोटी-सी समस्या अगर आती है तो जीवन को उदास महसूस करता है।

दुनिया में जितने प्रकार के नशे हैं सब स्वास्थ्य के लिए नुकसान कारक है। मनुष्य अज्ञान की पट्टी आँखों पर बाँधकर नशों का प्रयोग करता है। तत्पश्चात शारीरिक रोग तथा पीड़ाओं का शिकार बनता है, तो मन-ही-मन स्वयं को दोषी समझता है। जैसे कुत्ते को दाँतों तले हड्डी चबाते-चबाते जब मुख से खून निकलने लगता है तो खुश होता है। कुछ समय के बाद ज़खम की तकलीफ महसूस होती, तो तड़पता है। यही हाल आज के मानव का है।

कइयों को धन संचय, सन्तति तथा प्राकृतिक विनाशी वैभवों का अशुद्ध नशा होता है ! लेकिन ये सब विनाशी होने के कारण दुःखदाई हैं। धन संचय ज्यादा होता है तो चोर के डर के कारण मनुष्य को चैन की नींद नहीं आती। शारीरिक सौंदर्य का नशा भी कुछ समय तक सीमित है।

ईश्वरीय नशा ही वास्तव में शुद्ध और अविनाशी अर्थात् स्थायी नशा है। वास्तविक आत्मिक स्वरूप का नशा, ज्ञान रत्नों का नशा, भविष्य प्रालब्ध का नशा, परमात्मा से मधुर मिलन का नशा ये सब रूहानी या ईश्वरीय नशे-सुखदायी हैं। इन नशों में रहने वाली आत्माएँ ही सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलती रहती हैं। ऐसे एक सेंकन्ड के अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करने के लिए राजाओं ने राजाई का त्याग किया, संन्यासियों ने अनेक वर्ष जंगलों में तपस्या की, फिर भी वे क्षणिक अनुभव ही कर सके।

दुनियावी तथा ईश्वरीय नशे का भेद

जो शराब या भाँग पीकर अल्पकालीन नशे में चूर रहते उनकी आँखें तप्त आग जैसी लाल होती, मुख से गालियाँ तथा बदबू निकलती, चेहरा भयानक बन जाता, मन में विकारी संकल्प उत्पन्न होते, दृष्टि विकारी या अशुद्ध रहती। वह जानवर जैसा गन्दे गटर में गिरकर अपनी इज्जत गँवाता है। पत्नी तथा बच्चों को निर्धन बनाकर दर-दर भटकता है और अपना अमूल्य जीवन बरबाद करता है।

इसके विपरीत जो आत्माएँ ईश्वरीय नशे में सदा चूर रहती हैं, उनकी एक आँख में मुक्ति, दूसरी आँख में जीवन मुक्ति रहने से नयन शीतल, शान्त तथा पवित्र रहते हैं। सबको आत्मिक दृष्टि से देखने से मुख से मधुर सुखदायी बोल निकलते हैं। दिव्य गुणों की सुगन्धित खुशबू चारों ओर फैलती है। मन में सभी के प्रति शुभ भावनाएँ तथा शुभकामनाएँ रहती हैं। ज्ञान और योग रूपी पंखों के आधार से तीनों लोकों की सैर करते हैं। समाज ऐसे व्यक्ति पर सदा महिमा रूपी फूलों की बरसात करता है। यह आत्माएँ अपने अमूल्य समय को सफल करके जीवन को महान बनाती हैं।

ईश्वरीय नशा आत्मा की शान है

जब हम ईश्वरीय नशे में रहते हैं तो आत्मा अर्थात् स्व की शान, सुख शान्ति आनन्द प्रेम पवित्रता रूपी गुणों के शृंगार से सुशोभित रहती है। ऐसी

आत्मा किसी भी प्रकार का माया का वार होने पर भी अपनी अचल, अडोल तथा एकरस स्थिति में स्थित रहती है और ईश्वरीय नशा गुम होने से आत्मा अपनी शान से परे होकर परेशान होती है।

ईश्वरीय नशा एक संजीवनी है

जब आत्मा माया के सूक्ष्म वारों से मूर्च्छित होकर अर्थात अपना आत्मिक भान रूपी होश खोकर बेहोश होती है तब ईश्वरीय नशा संजीवनी का कार्य करता है और आत्मा को मूर्च्छित से सुरजीत कर जीवन में नया उमंग उल्लास प्रदान करके पुरुषार्थ की रफ्तार तेज करता है।

ईश्वरीय नशा एक कवच है

जिस आत्मा पर ईश्वरीय नशे का रंग चढ़ा हुआ होता है वह दुनियावी आकर्षण तथा तमोप्रधान वातावरण के प्रभाव से मुक्त रहती है। क्योंकि वह हर प्रकार से सुरक्षा में रहकर सदा योग की भट्टी में रहता है और अपने को सर्व खज़ानों से भरपूर करता है।

ईश्वरीय नशा आत्मा की खुशी का थर्मामीटर है

आत्मा जितनी ज्यादा ईश्वरीय नशे में खोई रहती है उतना ही आत्मा के खुशी का पारा चढ़ा रहेगा और अविनाशी थर्मामीटर रूपी चेहरा खिले हुए फूल जैसा होगा। जितना कम नशा होगा उतनी खुशी के पारे की डिग्री कम रहेगी और चेहरा उदास तथा मुरझाया हुआ रहेगा।

ईश्वरीय नशा एक रिफ्रिजरेटर है

जैसे रिफ्रिजरेटर(Refrigerator) कोई भी चीज़ को सदा ताजा (fresh) रखता है वैसे ही जब आत्मा ईश्वरीय नशे में रहती तो बुद्धि सदा ताज़ा रहकर हल्कापन महसूस करती है। ऐसी बुद्धि ही निरन्तर परमात्मा से मधुर मिलन करने में तत्पर रहकर आत्मा परमानन्द का अनुभव करती है।

ईश्वरीय नशा आत्मा के लिए माजून है

कहावत भी है—"खुशी जैसी खुराक नहीं, गमी जैसा रोग नहीं।" आत्मा के लिए खुशी ही शक्तिशाली बनाने वाली माजून या खुराक है जो सिर्फ ईश्वरीय नशे में रहने से ही प्राप्त होती है। क्योंकि आत्मा जब खुशी में रहती, तब ही हल्की बन परमधाम की ओर उड़ान भरके बुद्धि रूपी तार सर्वशक्तियों के सागर (Power house) परमात्मा से जुटाकर अथाह शक्तियाँ प्राप्त करके शक्तिशाली आत्मा बनती है और शक्तिशाली आत्मा को ही माया दूर से नमस्कार करती है।

जितना ऊंचा ईश्वरीय नशा—उतना ऊंचा तकदीर का नशा

हमारा ईश्वरीय नशा ऊँची तकदीर का परिचायक है। संसार में भी जितना बड़ा आदमी होता है, उतना ही उसे अधिक नशा रहता है तो अपने नशे से हम अपनी तकदीर को जान सकते हैं।

जितना ज्यादा नशा—उतनी माया से रक्षा

ईश्वरीय नशा हमें माया से सुरक्षित रखता है क्योंकि हमारे ऊपर ईश्वर का नशा चढ़ा रहता है तो माया का नशा स्वतः ही फीका पड़ जाता है। ईश्वरीय नशे में रहने वाली आत्मा के नज़दीक जाने की भी माया हिम्मत नहीं करती।

"सदा ईश्वरीय नशे में कैसे रहें ?"

जितना स्व में, बाप में और ड्रामा में अटूट निश्चय होगा उतना ज्यादा ईश्वरीय नशा रहेगा।

अपनी मनन शक्ति को बढ़ाओ। अमृतवेले तो अवश्य ही अमृत मंथन करो। इससे नये-नये ज्ञान रत्न बुद्धि में टपकते रहेंगे। फलस्वरूप आत्मा कभी भी स्वयं को खाली अनुभव नहीं करेगी। ज्ञान के बहुत हथियार हमारे पास होंगे जिससे हम माया के भिन्न-भिन्न वारों को सहज ही काट सकेंगे। कभी भी माया से हार न होने से ईश्वरीय नशा कम नहीं होगा। सदा अपनी वर्तमान और भविष्य की प्राप्तियों की स्मृति में रह—हमें भगवान मिल गये और उसने हमें अथाह ख़ज़ाना दिया—उस खज़ाने को बार-बार देखो तो ईश्वरीय नशा बढ़ता जाएगा।

अपने पुरुषार्थ को किन्हीं भी आधार पर न रक्खो। सभी आधार एक दिन निकल ही जाएँगे और तुम अपने को अकेला खड़ा पाओगे। इसलिए सुबह से ही अपनी स्थिति को सेट करके चलो। जब समस्या या विघ्न आवे तब भी केवल बाबा को याद

करो। इससे ईश्वरीय नशा कभी भी कम न होगा। सदा ये याद रखो कि हम किसी भी श्रीमत का उल्लंघन न कर दें या हमसे कोई विकर्म न हो जाए, नहीं तो ईश्वरीय नशा कम हो जाएगा। पवित्रता को बढ़ाने का विशेष अभ्यास करें। मानसिक पवित्रता बढ़ने से चित्त में अनुपम शान्ति रहती है। जिससे हल्कापन महसूस होता और ईश्वरीय नशा एक स्वाभाविक रूप से रहता है।

"कुछ ईश्वरीय नशे"

❀ याद करो, तुम ही वो हो, जिनसे भक्त मन्दिरों में वरदान माँग रहे हैं, सुख व शान्ति माँग रहे हैं और तुम उन्हें दे रहे हो।

❀ तुम विजयी रत्न हो, समस्त विश्व तुम्हारे पद चिह्नों का अनुसरण करेगा। इस विजय के नशे में रहो तो हार भी तुम्हें विजय का आनन्द देगी।

❀ हम राज ऋषि हैं, योग बल से विश्व का राज्य जीतने वाले। हमारे योग बल के आगे समस्त विश्व को झुकना पड़ेगा।

❀ हम भगवान से प्यार, सत्कार व सर्टीफ़िकेट प्राप्त करने वाले हैं। हम वो भाग्यवान आत्माएँ हैं जिनके कर्त्तव्यों की महिमा, जिनके भाग्य की महिमा स्वयं भगवान करते हैं।

❀ हम इस सृष्टि के आधार तथा भगवान के हथियार हैं। भगवान को भी हम पर नाज़ है।

"ईश्वरीय नशे से लाभ"

1. ईश्वरीय नशे में रहने वाले ही योगाभ्यास में एकाग्रचित्त हो सकते हैं क्योंकि नशे से चित्त की वृत्तियाँ शान्त हो जाती हैं और मन अति हल्का हो जाता है। अतः एकाग्रता ईश्वरीय नशे के अभ्यास से बढ़ती है।

2. ईश्वरीय नशे में रहने से बाह्य जगत का आकर्षण समाप्त हो जाता है और सभी मनोकामनाएँ नीरस लगने लगती हैं।

3. ईश्वरीय नशा उड़ता पंछी बना देता जिससे आत्मा सदा उड़ती कला में रहकर सम्पूर्णता की मंज़िल की ओर तेज़ी से बढ़ने लगती है।

4. सदा ईश्वरीय नशे में रहने से हर्षितमुखता, सहनशीलता, गंभीरता और धैर्यता रूपी दिव्य गुण आत्मा को वरदान के रूप में प्राप्त होते हैं।

5. ईश्वरीय नशे में रहने वाली आत्मा की मानापमान में अडोल स्थिति रहती है।

6. ईश्वरीय नशे में रहने से कम और धीरे बोल निकलेंगे, फलस्वरूप आत्मा रूपी बैटरी की शक्ति व्यर्थ खर्च नहीं होगी। रॉयल चलन होगी।

7. ईश्वरीय नशे में रहने से किसी भी आत्मा के अवगुणरूपी कंकड़ या किचड़े पर ध्यान नहीं जाएगा और गुणग्राही दृष्टि बनती जाएगी।

8. ईश्वरीय नशे में रहने से कार्य अर्थात् सेवा करने की क्षमता (Work efficiency) बढ़ती है जिससे हम अथक सेवाधारी बनते हैं।

9. ईश्वरीय नशे में रहने वाली आत्मा को मान-शान बहुत छोटी चीज़ अनुभव होगी। किसी के प्रति घृणा, ईर्ष्या द्वेष नहीं होगा।

10. ईश्वरीय नशे में रहने वाली आत्मा के चेहरे पर अविनाशी खुशी की झलक रहेगी जो औरों को बाबा की याद दिलाने की सेवा करेगी और जितना ज्यादा ईश्वरीय नशा रहेगा, उतनी आत्मा पर बृहस्पत की दशा रहेगी। ○

शिव ही सत्य है

लेखक—ब्र० कु० व्ही० जे० बराडपाँडे, मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी, बिलासपुर

मेरी अपनी मान्यता है कि व्यक्ति को स्वयं आजीवन विद्यार्थी समझना चाहिए ताकि उसमें हमेशा जिज्ञासु वृत्ति बनी रहे। हमेशा सीखने की वृत्ति तथा ज्ञान अर्जन करने की वृत्ति रहने से वह अपनी उन्नति कर सकता है। मनुष्य लौकिक माता-पिता से, लौकिक शिक्षक से और अपने अनुभव से बहुत सी बातें सीखता है। किन्तु यह लौकिक ज्ञान हुआ। ज्ञान के स्त्रोत केवल लौकिक ही नहीं किन्तु पारलौकिक भी होते हैं। परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से जो ईश्वरीय विश्व विद्यालय खोला है, उसका विद्यार्थी बनने पर मुझे यह एहसास होने लगा कि ज्ञान का पारलौकिक स्त्रोत इस पुरुषोत्तम संगम युग में प्रवाहित हआ है तथा मनुष्य ज्ञान सागर परमात्मा से ईश्वरीय ज्ञान का खजाना, जितना चाहे लूट सकता है। **ऐसा महसूस होता है कि स्वयं परमपिता परमात्मा मुझे पढ़ाई पढ़ा रहे हैं, अविनाशी पढ़ाई—ज्ञान के अनमोल रत्न स्नेह और खुशी से लूटा रहे हैं। ऐसा अनमोल ज्ञान आज तक नहीं मिला। ऐसा अनुभव होता है कि गोया बेहद के गुरु से बेहद की शिक्षा मिल रही है।**

सबसे पहली बार मैंने इस संस्था का नाम—केवल नाम, अप्रेल सन् ८१ में कुछ गणमान्य व्यक्तियों से सुना। मार्च ८१ में आध्यात्मिक प्रदर्शनी देखने के लिए मैं गया और जल्दी-जल्दी में चित्रों को देखा, कुछ सुना। अगस्त सन् ८१ में मुझे रक्षा बन्धन उत्सव का निमंत्रण इस संस्था की तरफ़ से मिला। मैं गया, और ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन सुनने पर मुझे इस ज्ञान में विशेषता की झलक मालूम हुई। ज्ञान, युक्ति युक्त मालूम हुआ। उस पर मैंने विचार मंथन किया। ब्रह्माकुमारी बहन द्वारा आह्वान करने पर मैंने साप्ताहिक पाठ्यक्रम पूरा किया। जिसे सुनकर मुझे आत्मा-परमात्मा और सृष्टिचक्र के विषय में निश्चित सिद्धान्तों का पता लगा। जैसे-जैसे मैं ज्ञान की गहराई में उतरा, अनेक ईश्वरीय रहस्यों का पता चला। **सत्यता का विशेष अनुभव हुआ।** सत्य दिखता नहीं बल्कि तर्क और बुद्धि से पहचाना जाता है। इस कसौटि पर मैंने जब इस ज्ञान को परखा तो सत्यता की अनुभूति हुई और मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा। किसी बात को सत्सत् विवेक बुद्धि, स्वानुभव, मान्यताओं तथा शास्त्रीय आधारों की कसौटी पर परखे बिना उसकी सत्यता का पता नहीं चलता। सत्यता की खोज आत्मोन्नति के लिये ज़रूरी है। न्यायालयों में भी न्यायाधीशगण किसी मामले की वास्तविकता जानने के लिये विश्वास, तर्क, संभावनायें, विवेक, शास्त्र आदि का सहारा लेकर ही सही निर्णय पर पहुंचते हैं। इनके बिना सही निर्णय पर नहीं पहुंचा जा सकता। उसी प्रकार पारलौकिक और आध्यात्मिक ज्ञान की सत्यता को भी इन कसौटियों पर परख कर निर्णय पर पहुंचना है। कलियुगी मानव के लिए यही तो कसौटि है। गीता में भगवान कहते हैं कि मैं एक साधारण तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान सुनाता हूं। किन्तु कोटों में कोऊ और कोऊ में कोऊ मुझे पहचानता है। अर्थ यही हुआ कि बहुत कम लोग परमात्मा को पहचानने की कोशिश करते हैं। जो कोशिश करते हैं वे जरूर पहचानते हैं। **कसौटि पर कसने पर मुझे ईश्वरीय मामलों में वास्तविकता का अनुभव और सत्यम्-शिवं-सुन्दरम् की सार्थकता महसूस हुई। मैंने यह जाना कि "शिव ही सत्य है।" ज्ञान में सत्यता महसूस होना ही शिव दर्शन है।**

मैं प्रतिदिन शाम को योग-अभ्यास के लिए जाने लगा। मुझे परम शांति और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होने लगा। अमृत बेले का महत्व मालूम होने पर मैं

सवेरे ४ बजे उठने लगा। मुझे देर से उठने की आदत थी। किन्तु अब देर से उठना ही अच्छा ही नहीं लगता। सवेरे अमृत वेले योग अभ्यास किये बिना तथा ज्ञान मुरली सुने बिना कमी का अनुभव मालूम होता है। इस राजयोग से मानसिक शांति और आत्मिक बल का अनुभव मुझे हुआ है तथा स्वभाव, अभिरुचि और दृष्टिकोण में परिवर्तन महसूस हुआ है, प्रतिदिन योगाभ्यास करने से सारा दिन उत्साह, खुशी व शाँति से व्यतित होता है और कोई उलझन मालूम नहीं होती।

यह ईश्वरीय ज्ञान केवल सुनाने और सुनने के लिए नहीं, बल्कि प्रयोजन ज्ञान सुनकर धारण करने का है। व्यावहारिक जीवन में दिव्य गुणों को धारण करने के लिए युक्तियाँ बताई जाती हैं। यह इस संस्था की विशेषता है। सर्वशक्तिमान, सर्व गुणों के सागर परमात्मा शिव द्वारा बताई हुई ये युक्तियाँ हैं, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास हो गया, क्योंकि इन युक्तियों के प्रयोग से धारणा कर सकना मैंने संभव पाया है। राजयोग के अभ्यास से मानसिक व आत्मिक शक्ति के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य में पहले से अधिक परिवर्तन महसूस हुआ। जैसा मन वैसा शरीर—इस सिद्धाँत की सत्यता अवश्य मालूम होती है। ज्ञान मुरली में मैंने जब यह सुना कि "शिव बाबा आत्मा के डाक्टर हैं तो मुझे सचमुच इस महावाक्य की सत्यता का अनुभव हुआ। यदि आत्मा का निदान डाक्टर कर डाले और उसको दवाई देवें तो फिर भला शरीर व्याधि क्यों हो? आत्मा की चेकिंग करना मैंने जरूरी समझा, कुछ खिक्ट-पिट जरूर दीखी जो प्रतिदिन के योगाभ्यास से दूर होती गई।

वसुधैव कुटुम्बकम्, हिन्दु-मुस्लिम भाई-भाई, हम सब खुदा के बंदे हैं—ये नारे मैं कई वर्षों से सुनता आया था, किन्तु इनके पीछे जो वास्तविक रहस्य है, वह इस ज्ञान से ही मालूम हो सका। जब मेरी बुद्धि में यह बात बैठी कि परमात्मा सब आत्माओं का अविनाशी आत्मिक पिता है तो मन में परमात्मा के प्रति स्नेह जागृत हुआ। अब मैं सेवा केन्द्र पर प्रति दिन जाता हूं और वहां के सात्विक और शांत वातावरण में बैठता हूं तो ऐसा लगता है कि हम सब परिवार के सदस्य हैं, जो योग स्थित होकर हमारे युगों-युगों से बिछड़े हुए पिता शिव बाबा की मधुर याद में बैठकर मिलन का आनन्द ले रहे हैं।

इस ज्ञान से मुझे पता चला कि सृष्टि के वर्तमान काल खण्ड अर्थात् पुरुषोत्तम संगम युग में परमात्मा सतयुगी सृष्टि की स्थापना करने के लिए आये हैं तथा विनाश के बाद अपने सब बच्चों को अपने घर मुक्ति धाम, शान्तिधाम ले जाने के लिए आयें हैं और राजयोग सिखाने के लिए आयें हैं तो मेरा हृदय गदगद हो उठा। जब मुझे पता चला कि परमपिता शिव ही अविनाशी और स्थायी पिता हैं तो ऐसे पिता को पाकर मुझे यह अनुभव हुआ कि जो कुछ पाना था वह सब पा लिया।

□□□□

"अभी-अभी"

ले०—ब्र० कु० रछपाल, चण्डीगढ़

"ज़िन्दगी में मिलता, सच्चा यार अभी-अभी,
उसी से है पाया, सच्चा प्यार अभी-अभी।
दुःखों के इस जहाँ में, दुःखदार हैं बहुत,
दुःख मिटाने आया, दुःखनिवार अभी-अभी।
मारधाड़ को यह दुनिया, खिलाती मार है बहुत,
मिलती है, मीठे बाप की, पुचकार अभी-अभी।
भक्ति में जिसे पुकारा, हे पतित-पावन आओ,
होती हैं उस भगवान से, आँखें चार अभी-अभी।
पावन बनाकर हमको, सुखधाम में ले जाये,
दिल लेने है आया, दिलदार अभी-अभी।
उठो ऐ दुनिया वालो, कुम्भकरणी नींद त्यागो,
'संगम' कल्प में आता, एक बार, अभी-अभी।"

—:०:—

एकांकी

"उन्होंने कहा था"

ले०—ब्र० कु० सूरज, आबू पर्वत

पात्र—धनसुख—एक ४० वर्षीय गृहस्थी
मीरा—धनसुख की पत्नी
हीरा—मीरा का २० वर्षीय पुत्र, एक विद्यार्थी
नीना, बीना, मीरा की १४ व १२ वर्षीय पुत्री

उत्तर प्रदेश के मध्य भाग का एक छोटा नगर। सितम्बर का प्रारम्भ। समय प्रातः चार बजे। रात्री को गंगा में अचानक ही भीषण बाढ़ आई। चारों ओर पानी ही पानी, प्रलय की याद दिलाने लगा। सारा नगर उजड़ गया। सबका सब-कुछ बह गया। धनसुख व उसका परिवार न जाने कैसे एक बहते हुए छप्पर पर बैठ गये जो तैरता हुआ उन्हें मझधार के बीच से ले चलने लगा।

दृश्य अत्यन्त डरावना था। चारों ओर हाहाकार मचा था। बचाओ···बचाओ की हृदय स्पर्शी आवाजें आ रही थीं। इस प्रलय लीला में जो बच गये, उनकी स्थिति अधिक दयनीय थी। वे सब-कुछ—धन, परिवार, लुट जाने के शोक से व्यथित थे। इस प्रलय के बीच धनसुख का परिवार छप्पर पर बैठा अति चिन्तित दिखाई दे रहा है।

धनसुख—(दुःख भरी आवाज में मीरा से) सब कुछ लुट गया।

मीरा—(ढ़ाढ़स बंधाती हुई) तुम चिन्ता न करो। हमारा असली धन तो हमारे साथ है, भगवान से प्रार्थना करो हमारी रक्षा करे।

नेपथ्य में आवाज आ रही है···बचाओ···बचाओ

नीना और बीना—(भयभीत) मम्मी डर लग रहा है बचाओ, हमें।

मीरा—भगवान को याद करो बेटी, वही रक्षक है। हमें क्या पता था कि ऐसे भी दिन देखने पड़ेंगे। हे भगवान···दया करो।

धनसुख—(परेशान सा) कहीं कोई भी नजर नहीं आता। पता नहीं ये तूफान की लहरें हमें कहाँ ले जाएंगी। हमारा जीवन बचेगा या नहीं। हमारे बच्चों का क्या होगा।

(सिर पर हाथ रखकर)—हे भगवान, हमने तो कोई पाप भी नहीं किया। ये किसकी सजा है।

मीरा—हे प्रभु, हमें बचाओ। मैं तुम्हारा सुन्दर मन्दिर बनवाऊँगी (सभी हाथ जोड़कर भगवान को याद करते हैं)

धनसुख—(हीरा को चुप देखकर) बेटे शोक न करो। भगवान जो भी करे। भगवान से प्रार्थना करो, हमें बचाये।

नीना-बीना—भैया तुम दुःखी न होओ। हम डूबकर भी तुम्हें बचायेंगे।

मीरा—तुम मेरे कुल के चिराग हो हीरा। ईश्वर को याद करो, हे प्रभु, ये भयंकर नाश। हमने तो कभी सोचा भी नहीं था।

नीना-बीना—(बहती नारी को देखकर) मम्मी, मम्मी, वह देखो कोई औरत बही जा रही है। हमें डर लगता है···माँ···

धनसुख—पानी बढ़ता जा रहा है। भगवान ही मालिक है अब तो। वह देखो दो बच्चे बहे जा रहे हैं। मेरा तो दिल दहल रहा है, देखा नहीं जाता···

तभी बारिश होने लगती है···

मीरा—हे भगवान, अब हम मरे,। प्रभु मेरे बच्चों की रक्षा करना। (हीरा को) बेटे अपनी बहनों की रक्षा कर। तू क्या सोच में बैठा है।

हीरा—माँ, मुझे उस दिन की बात रह-रहकर याद आ रही है।

मीरा—किस दिन की बात···

हीरा—माँ, जब हमारे कस्बे में सफेद पोशवाली वे बहनें आई थीं। उन्होंने कुछ चित्र लगाये थे। सबको समझाया था।

मीरा—हाँ, वे ब्रह्माकुमारी! बड़ी देवी जैसी

लगती थीं वे।

हीरा—हाँ माँ, उन्होंने कहा था कि जल्दी ही प्रलय होगी और भगवान आया हुआ है, उसे पहचानो।

मीरा—हाँ कुछ ऐसा कहा तो था। पर हमने ध्यान ही नहीं दिया था कि लोग ऐसे ही कहते हैं। परन्तु हमें क्या पता था···

नीना—माँ उन्होंने ये भी कहा था कि भगवान से मिलने का यही समय है। जो भगवान की आज्ञा पर चलेगा, विनाश के समय उसकी रक्षा होगी।

धनसुख—हाँ, मुझे भी याद आया। उन्होंने कहा था कि ये अन्तिम जन्म है, और भगवान की आज्ञा है पवित्र बनो ओर योगी बनो।

मीरा—हाँ, परन्तु हमने उनका मज़ाक किया था।

हीरा—पिता जी ने कहा था—ये कल्पना है। आप अच्छे लोगों को ढोंगी ही कहते थे। उसी का ये फल है जो आज···

नीना—मेरा तो विचार था, मैं ज्ञान लूँ, परन्तु मम्मी ने जाने नहीं दिया। कहा था—तेरी उम्र अभी ज्ञान ध्यान की है क्या—अब हमारी उम्र···इस पानी में···

हीरा—पिताजी, मैं वहाँ दो-दिन आपसे छुप-छुपकर योग-शिविर में गया था। उन्होंने कहा था कि भगवान स्वयं राजयोग सिखा रहे हैं। मुझे बहुत अच्छा लगा था। मैं वही योग अब कर रहा था। मुझे उसकी विधि याद है।

धनसुख—तो योग ही करो। शायद तेरे पुण्य से ही भगवान हमें बचा ले।

(पश्चाताप से)—ओह मैंने बड़ी भूल की। प्रभु, क्षमा करना। मैंने उन देवियों की बात नहीं मानी थी, उनसे व्यर्थ को बहस की थी कि कलियुग तो अभी लाखों वर्ष चलेगा। मुझे क्या पता था कि ये ईश्वरीय वाणी थी।

हे प्रभु। काश, मै भी आपका ज्ञान ले लेता और तुझे प्राप्त कर लेता तो शायद आज मुझे ये दिन न देखने पड़ते।

मीरा—और मैंने भी ध्यान नहीं दिया था। ओह मैं पापिन, बच्चों को भी वहाँ नहीं जाने दिया।··· परन्तु अब पछताए होत क्या···

नीना-बीना—माँ अब तो भगवान ही हमारा रक्षक है।

मीरा—तुम मेरे बच्चे बड़े होवनहार हो। तुम्हारी बातें ही मुझे शान्ति देती हैं।

हीरा—अब हम सब योग की विधि से ही भगवान को याद करें।

मीरा—हाँ हाँ। हे प्रभु, आप हमारा जीवन बचा लो तो हम उन ब्रह्माकुमारियों को ढूँढ़कर उनसे क्षमा माँगेंगे और आपका ज्ञान लेंगे। हे प्रभु, आप धरती पर आये भी, हमें पता भी चला, परन्तु मैं दुर्भागिनी···

हीरा—माँ, भगवान को वचन दो कि अगर हम बच गये तो उनका सच्चा ज्ञान लेंगे।

मीरा—वचन देती हूँ···

हीरा—अच्छा शान्त बैठो···देखो वर्षा बन्द हो गई। भगवान ने हमारी सुन ली। रोशनी हो रही है। शायद हम बच जाएं। शायद भगवान ही वेष बदलकर आ जाए और हमें पार कर दे। वही तो मझधार में डूबी नैया को पार करने वाले हैं।

धनसुख—मुझे तुम्हारी बात सुनकर गम भूल गये हैं···बेटा।

हीरा—अच्छा अपने को इस देह से न्यारे आत्मा समझकर बैठो···देह मोटर है व आत्मा ड्राइवर··· (सभी शान्त बैठ जाते हैं)।

मीरा—हे प्रभु···

हीरा—सोचो···मैं आत्मा शान्त स्वरूप, पवित्र स्वरूप हूँ मैं इस देह रूपी विनाशी चोले से भिन्न हूँ। मैं भगवान की अविनाशी सन्तान हूँ···भगवान ज्योति स्वरूप, परमधाम के वासी हैं। वे ज्ञान के सागर, सर्व के रक्षक हैं···

भगवान से प्रार्थना करो—हे विश्व-रक्षक, हम तुम्हारे हैं. अब हम तुम्हारी ही आज्ञाओं पर चलकर जीवन को पवित्र बनायेंगे। हमारी भूलें क्षमा कर दो।

और इसी मध्य धुँधले प्रकाश में राहत कार्य में लगी नाव उनकी ओर आती दिखाई देती है। ▭

"एक लाख की एक बात"

ले० — ब्र० कु० वीरबाला
राजभवन, लखनऊ

प्यारे बच्चो, बहुत समय बीता, एक देश में एक राजा रहता था। उसके राज्य की सीमा बहुत दूर-दूर तक फैली हुई थी। धन-दौलत से खज़ाने भरे पड़े थे। कमी थी तो केवल यह कि राजा के कोई पुत्र न था, केवल एक कन्या थी, जिसे राजा बहुत प्यार करता था।

राजा बहुत दयालु था। दान पुण्य में उसकी रुचि थी। इसके अतिरिक्त उसके हृदय की एक और विशालता थी, वह यह—कि जिस व्यापारी का सामान कहीं नहीं बिकता था वह सीधे राजा के पास आता और राजा सामान खरीद कर उसकी पूरी कीमत चुका देता था। प्राचीन समय में यातायात की इतनी सुविधा तो थी नहीं, जितनी आज है। अतः व्यापारी लोग ऊँटों व घोड़ों पर सामान लादकर एक देश से दूसरे देश में जाया करते थे। व्यापारियों में भी यह बात प्रसिद्ध थी कि राजा के द्वार से कोई निराश नहीं लौटता है। अतः अनेक व्यापारी उस राजा के देश में अपना सामान बेचने आया करते थे।

एक दिन एक विचित्र व्यापारी राजा के दरबार में आया। सामान के नाम पर उसके पास कागज़ के छोटे-छोटे पर्चे थे और प्रत्येक पर्चे पर कुछ-न-कुछ लिखा हुआ था। उसका सामान देखकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने व्यापारी से पूछा—तुम क्या सामान बेचते हो ?

"महाराज, मैं उपदेश बेचता हूँ।"

"कहाँ हैं तुम्हारे उपदेश, ज़रा देखें तो।"

इस पर व्यापारी ने एक पर्चा पकड़ा दिया। कीमत पूछे जाने पर व्यापारी ने कहा—"महाराज इस पर्चे में एक बात है, एक उपदेश है और एक बात की कीमत एक लाख रुपये है तथा इसके साथ एक शर्त यह है कि इस पर्चे को सदैव जेब में रक्खे रहना होगा और मन्त्र की तरह दिन में कई बार इसे मन-ही-मन दोहराना होगा। समय पर यह मन्त्र आपको लाभ देगा।"

राजा ने वह उपदेश एक लाख रुपया देकर खरीद लिया। पर्चे को पढ़कर देखा तो उसमें केवल तीन शब्द थे,—"क्रोध को रोको।"

इस घटना को कुछ समय बीत गया और इस समय में राजा व्यापारी के कथनानुसार मन्त्र को जेब में रखे रहता और उसमें लिखे शब्दों का बार-बार स्मरण करता। धीरे-धीरे उस मन्त्र के शब्द उसके मन बुद्धि पर छा गये और स्वतः ही उस बात की याद बनी रहती।

इधर राजकुमारी भी समय के साथ सयानी हो रही थी। राजघरानों में राजकुमारियों को भी सैनिक शिक्षा में निपुण किया जाता था ताकि समय पड़ने पर वह अपनी और प्रजा की रक्षा कर सकें। अतः राजकुमारी भी अस्त्र-शस्त्र चलाना सीखती, घुड़सवारी करती और शिकार खेलने जाती। उसने इस कार्य के लिए पुरुषों जैसी पोशाक तैयार कराई थी जिसे पहनकर वह बिल्कुल युवा राजकुमार जैसी लगती थी। राजा ने उसे पुरुष पोशाक में कभी नहीं देखा था क्योंकि जिस समय राजकुमारी घुड़सवारी या शिकार को जाती उस समय राजा राजदरबार में होते।

एक दिन राजकुमारी पुरुष वेश में सैनिकों के साथ शिकार को गई, वापिस लौटने में देर हो गई। उसकी आँखों में नींद भरी थी। अतः कपड़े बदले बिना वह उसी पोशाक में अपनी माता के पास जाकर सो

गई। रात्रो में राजा जब राजमहल में आये तो उन्होंने एक युवक को रानी के शयन कक्ष में सोते पाया। यह देखकर वह क्रोध से तमतमा गये और म्यान से तलवार खींचकर उस युवक को मारना चाहा। तभी उन्हें वही उपदेश याद आ गया—"क्रोध को रोको।" उनके मन में विचार आया—"मन्त्र के अनुसार करने में हानि भी क्या है—क्यों न आज हम मन्त्र की परीक्षा लें और फिर यह युवक भागकर जायेगा भी तो कहाँ। अभी प्रहरियों को सजग किये देता हूँ।"

राजा की पूछताछ से राजमहल में हलचल मच गई। रानी के महल में जाकर देखा गया तो वहाँ कोई युवक नहीं बल्कि युवती राजकुमारी पुरुष वेश धारण किये प्रगाढ़ निद्रा में लीन थी।

तब राजा को इस मन्त्र के महत्त्व का पता चला। यदि मन्त्र उनकी बुद्धि में न होता तो वह घोर विपत्ति में फँस जाते और अपने राज्य की एक मात्र उत्तराधिकारिणी राजकुमारी की जान से हाथ धो बैठते।

इस दृष्टान्त से देखें तो एक छोटी-सी सीख भी जीवन में कितनी उपयोगी होती है। फिर परमपिता परमात्मा तो इस प्रकार की अनेकानेक शिक्षाओं से हमारे जीवन को विभूषित करते रहते हैं। श्रीमुख उच्चारित महावाक्यों को जीवन में धारण करने से हम कौड़ी से हीरे तुल्य बन जाते हैं। इन शिक्षाओं का मूल्य हम उसे क्या देते हैं—जिन्दगी का कड़ा-कचरा अर्थात् पाँच विकार और बदले में हमें मिलता है ज्ञान रत्नों का अनन्त भंडार, अतीन्द्रिय सुख से परिपूरित संगमयुगी जीवन तथा २१ जन्मों के लिये अटल अखंड दैवी स्वराज्य का श्रेष्ठ पद।

अतः बच्चो, शिव बाबा के महावाक्यों को श्रवण कर, याद कर, धारण कर आप भी पद्मापद्मा भाग्यशाली बनो।

विद्या भवन इंस्टीट्यूट के प्रिन्सीपल कालूलाल श्रीमाली (पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री) उदयपुर में संग्रहालय देखते हुए। ब्र० कु० शीला चित्रों की व्याख्या करते हुए।

ब्र० कु० रुकमणि जी, शीलांग में भ्राता डी० एन० जोशी सदस्य विधान सभा, मेघालय तथा कामाख्या लाल बाजोरिया जी को चित्रों की व्याख्या करते हुए, ब्र० कु० शीला साथ में हैं। ↓

८४ साल बनाम ८४ जन्म

ब्र० कु० शकुन्तला, दादरी

बेटी, "यह मेरा ८४ वाँ साल है।"

ये शब्द उस बूढ़े पण्डित जी के हैं जो हमारे पड़ोस में ही रहता है और धर्म-कर्म व भक्ति-भावना वाला व्यक्ति है। वह हमारे घर अक्सर आता रहता हैं। बड़ा नम्रचित्त है। उस दिन वह अपने ८४ सालों की लम्बी कहानी मुझे सुनाने लगा और मैं बड़ी तन्मयता से सुनने लगी।

बेटी, "मैंने जब से होश सम्भाला है अपने आपको इस रामलीला में ही पार्ट बजाते पाया है। बचपन से ही मुझे रामलीला बहुत पसन्द आती थी अतः मैं उसमें लव-कुश का पार्ट अदा करता था। इसके बाद जवान होने पर राम और लक्ष्मण के रूप में रहा और अब वृद्धावस्था में दशरथ की भूमिका में अपने को बिल्कुल समर्थ समझता हूँ।"

"शुरू में जब मैं रामलीला में शामिल हुआ था तो मुझे मेरी माँ व पिताजी व अन्य भाई-बहन, सगे सम्बन्धी बहुत याद आते थे। क्योंकि घर से काफी दूर हम रामलीला का प्रदर्शन करते थे। अपने घर की याद तो हमेशा स्मृति-पटल पर रहती ही थी।" एक लम्बी साँस खींचते हुए पण्डित जी बोले, "पर बेटी अब तो ऐसा लगता है जैसे यही (रामलीला के के अन्य पार्टधारी) अपनी दुनियाँ है। यही अपना घर, परिवार, सगे सम्बन्धी सब यही हैं। रामलीला के दूसरे पार्टधारियों में मैं इतना घुल-मिल चुका हूँ कि मुझे अपना असली नाम तक कभी-कभी भूल जाता है। अपने वास्तविक बेटों की उपेक्षा राम, लक्ष्मण में मेरा अधिक मोह है।"

"कई बार मेरे घर से मेरे बेटे या सगे-संबंधी बुलाने आते हैं। कहते हैं अब तो ८४ वाँ साल पार कर रहे हो, बहुत बूढ़े हो गये हो अब इनसे मोह ममता छोड़कर जीवन के बाकी समय को आराम से एक जगह बैठकर शान्ति पूर्वक व्यतीत करो। पर न जाने क्यों मुझे इन सबमें परायेपन की बू आती है।" मैं बीच में बोल उठी, "पन्डित जी अपने बेटे के लिए आपके मन में यह 'परायापन' कहाँ से और क्यों आया ?"

"यही तो मैं भी निर्णय नहीं कर पा रहा हूँ" पण्डित जी कुछ उदास और सोचने की मुद्रा में बोले। "मुझे स्वयं पर भी विश्वास नहीं होता कि मेरे सगे बेटे के लिए यह परायेपन का भूत मेरे मन में कहाँ से आ घुसा। कभी सोचता हूँ शायद इतने दिन दशरथ की भूमिका में रहने से मुझे सिर्फ राम-लक्ष्मण ही अच्छे लगते हैं। इस विचार से थोड़ी दिल को तसल्ली मिलती है।"

पण्डित जी से उसके वर्तमान जन्म के ८४ वर्षों की कहानी सुनकर मुझे इसके पिछले ८४ जन्म याद आ जाते हैं। वास्तव में उसके इस जन्म के ८४ वर्षों की कहानी से बिल्कुल मिलती हुई उसके ८४ जन्मों की कहानी है। सोचती हूँ यह एक पण्डित जी ही नहीं बल्कि सारी दुनिया का हर एक इन्सान रामलीला की तरह संसार रूपी नाटक में ८४ जन्मों तक पार्ट बजाते-बजाते अपने असली नाम, धाम, माता-पिता व सगे-सम्बन्धियों को भूला हुआ है। उसे यह तनिक भी भान नहीं है कि मैं वास्तव में कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? अब कहाँ जाना है और मेरे माँ-बाप कौन हैं ?

जब ८४ सालों में ही यानि जन्म से ही उस पंडित जी का रामलीला परिवार से मोह का बन्धन बन्ध गया और उसे ही अपनी वास्तविक दुनिया मानने लगा तो ८४ जन्मों तक इस सृष्टि रूपी नाटक में पार्ट बजाते-बजाते यदि इन्सान अपने असली नाम, धाम व माँ-बाप को भूल जाये तो इसमें कोई आश्चर्य

की बात नहीं है।

परन्तु अब प्रश्न यह उठता है कि इन सभी (नाटक के अदाकारों) को यह कौन बतावे कि तुम सब कौन हो और कहाँ से आये हो ? स्पष्ट है यह भेद तो वही खोल सकता है जो आदि से लेकर अन्त तक इस सारे ड्रामा का साक्षी हो। जिस तरह रामलीला का एक न एक दिन समाप्ति दिवस आता है उसी तरह इस सृष्टि रूपी नाटक का भी अन्त आ गया है।

अत: मैं इस वृहद् नाटक के सभी पार्टधारियों को ईश्वरीय नियन्त्रण दे रही हूँ कि पार्ट बजाते-बजाते आप सबकी वानप्रस्थ अवस्था आ गई है। बूढ़ा शरीर तो लकड़ी के सहारे चल सकता है परन्तु यह तुम्हारी आत्मा जो ८४ जन्म लेते-लेते बिल्कुल बूढ़ी हो चुकी है इसका सहारा तो एक परमपिता परम-आत्मा शिव ही है। अब सबको अपने असली घर (परमधाम) चलना है। किसी को भी अपने घर व अपने पिता की सुध नहीं है परन्तु उस परमात्मा को अपने बच्चे याद हैं।

दयालु पिता शिव कहते है, "हे बच्चों ! अब मैं यह ड्रामा खत्म करने जा रहा हूँ अत: इस खेल की समाप्ति से पहले मुझे (अपने बाप को) पहचान लो नहीं तो फिर बहुत पछताओगे।"

आज केवल ८४ वर्षों वाला एक वृद्ध ही बढ़ा नहीं बल्कि अभी-अभी जन्म लेने वाले को भी वानप्रस्थ अवस्था है क्योंकि यह उसका आखिरी जन्म है।

क्या हर एक इन्सान अपने इस ८४ के चक्कर को जानता है ? वृद्ध पण्डित जी के चले जाने पर मैं इन्हीं विचारों में मग्न हो गई। ▭

एक बार फिर दीप जले हैं ?

ले०—रामऋषि शुक्ल, लखनऊ

हम आत्मा हैं, ज्योति-बिन्दु हैं, हम देही सबसे पहले हैं।
एक बार फिर दीप जले हैं।

सच्ची-सच्ची दीपमालिका—
की पावन वेला फिर आयी
परमपिता ने परमधाम से—
आकर आत्मिक ज्योति जगायी

मनोविकारों की, माया की, जड़ता के हिम-नग पिघले हैं।
एक बार फिर दीप जले हैं।

परमपिता से हमने पायी
आत्म-बुद्धि की अनुपम थाथी
मन परिपूरित ज्ञान-घृत से
योग-शक्ति की जलती बाती

उन्मीलन की मृदु आभा में अनगिन कर्म-विपाक गले हैं।
एक बार फिर दीप जले हैं।

सृष्टि-जगत की मानवता के
विश्व-पिता परमेश्वर शिव हैं
शाश्वत ज्योति-बिन्दु परमात्मन्
सद्गुण-ज्ञान-सिन्धु अभिनव हैं

उनके ही प्रकाश से ज्योतित हम सब ज्योति-बिन्दु उजले हैं।
एक बार फिर दीप जले हैं।

शिव बाबा हैं पुन: अवतरित
प्रजापिता ब्रह्मा के तन में
पावनता का, सुख शान्ति का
दाम-भाग लाये जीवन में

श्रेष्ठाचारी दैवी जीवन के सुन्दर आदर्श पले हैं।
एक बार फिर दीप जले हैं।

लाये हैं वरदान घनेरे
अपनी श्रीमत की झोली में
बाँट रहे हैं अवढर दानी
ज्ञानयुक्त मीठी बोली में

सुख-सम्पत्ति के दिन आए, दु:ख दुर्गति दिन बीत चले हैं।
एक बार फिर दीप जले हैं।

मेरा अनुभव

आदर्श जीवन

लेखक—ब्र० कु० राजकिरण, मुजफ्फरनगर

ब्रह्मा कुमारियों का नाम सुनते ही मनुष्यों के मन पर अनेक चित्र उभरने लगते हैं···कल्पना भरी उड़ानें और हवा में सुनी हुई अनेक चर्चाएँ उन्हें इन साक्षात् देवियों से दूर रखने के लिए बाध्य करती हैं। ये तो प्रसिद्ध है कि महानात्माओं के काल में मानव जगत ने उन्हें यथार्थ रूप से नहीं पहचाना, परन्तु उनके चले जाने पर उनके पैरों के रज कणों को चाटने में भी अपने को भाग्यशाली समझा।

कौन हैं ये ब्रह्माकुमारियाँ

प्रजापिता ब्रह्मा के कमल मुख से निकली ये ब्रह्माकुमारियाँ वो ज्ञान गंगाए हैं जिनके पीछे स्वयं विश्व रक्षक भगवान है अर्थात् ज्ञान सागर परमात्मा ने जो ज्ञान की सत्य गुत्थियाँ ब्रह्मा-मुख द्वारा खोली हैं उसे जन-जन तक पहुँचाकर इस विश्व को स्वर्ग बनाने वाली ये देवियाँ हैं। ये साधारण नारियाँ ही हैं परन्तु दिव्य गुणों और शक्तियों से सुसज्जित देवियाँ हैं। ये मनुष्य को भगवान का सत्य ज्ञान देकर उन्हें मनोविकारों से मुक्त कराकर भगवान के समीप ले जाती हैं।

ब्रह्मचर्य इनका शृंगार है

ब्रह्माकुमारियाँ इस जग की शोभा हैं और ब्रह्मचर्य ब्रह्माकुमारियों का शृंगार है। "ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ चरित्र का आधार है"—यह निर्विवाद सत्य है। इस पवित्रता के स्तम्भ पर ही यह विश्व टिका हुआ है। अगर पवित्रता का स्तम्भ विश्व से निकाल दिया जाये तो विश्व जलकर राख हो जाये और ब्रह्माकुमारियाँ अपने पवित्रता रूपी स्तम्भ से इस जग का सहारा हैं।

मनुष्य उनकी स्वच्छता को देखकर उन्हें संदिग्ध दृष्टि से देखते हैं परन्तु स्वच्छता और श्वेत वस्त्र उनके उज्जवल चरित्र के प्रतीक हैं। उनके चेहरों का तेज व अलौकिकता देखकर कोई भी समझदार व्यक्ति उनके उच्च चरित्र को आँक सकता है। लोग कहते हैं कि इस कलियुगी दुनिया में ब्रह्मचर्य जीवन बिताना नितांत कठिन कार्य है। परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं कि यह परमपिता शिव द्वारा उन्हें अमोघ शक्ति के रूप में प्राप्त वरदान है।

वे ज्ञान और योग के बल से हिम्मतहीन व निराश आत्माओं में भी ब्रह्मचर्य पालन करने का साहस जागृत कर देती हैं—यह उनके ब्रह्मचर्य बल का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उनके ब्रह्मचर्य व ज्ञान-योग के बल के आगे इस विश्व की बड़ी-से-बड़ी शक्ति व बड़े से बड़े विद्वान को भी घुटने टेकने पड़ते हैं। उनके पवित्रता के बल के समक्ष संसार का कोई भी विघ्न ठहर नहीं सकता।

ये विश्व में दैवी सम्पदा लायेंगी

उन्होंने परमात्मा के इशारे पर विश्व में पुनः प्रायः लोप दैवी सम्पदा को स्थापित करने का बीड़ा उठाया है। इसके लिए ब्रह्मचर्य का बल व साहस उनके लिए आवश्यक है। कलियुगी मानव को देवतुल्य बनाना, यह बिना पवित्रता के बल के सम्भव नहीं है। यह काय भाषणों से नहीं, पवित्रता से होता है। इसके लिए उन्होंने अपना तन, मन व धन परमात्मा को अर्पण कर दिया है। उनका अपना कुछ भी नहीं। यह समर्पण भाव उनकी महानता का प्रमुख आधार है। उनका वर्तमान जीवन भी देव तुल्य है। तब ही तो वे विश्व को स्वर्ग बनाने की चुनौती देती हैं।

उनकी दिनचर्या ऋषियों जैसी है

चरित्र का नाम सुनकर आज के सभ्य कहे जाने वाले मनुष्य हँसते हैं। चरित्र भी कोई सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति है—यह बुद्धि जीवी कहलाने वाले मनुष्य

की बुद्धि से परे की बात है। वो इसे कल्पना या पुरानापन कहकर अपनी सन्तान को आधुनिक बनाकर विकारों के गर्त में डालने में ही अपना श्रेय समझते हैं।

परन्तु चरित्र की प्रतिमूर्ति ब्रह्माकुमारियों की दिनचर्या उनके श्रेष्ठ चरित्र का प्रतिबिम्ब है। प्रातः उठकर स्वच्छ वायु व स्वच्छ वातावरण में ब्रह्मलोक में विचरण करना उनके चरित्र को प्रतिपल दिव्य बनाता है। प्रतिदिन सुबह ही ज्ञान-श्रवण करना उनके मन के प्रमाद को दूर कर मन में उल्लास व हर्ष की त्रिवेणी बहाता है। फिर कर्म में सेवा भाव व अनासक्त भाव रखकर दैनिक कार्य करना उन्हें कर्मों के बन्धन से मुक्त रखता है व शाम को पुनः योग-अभ्यास व सत्संग उनकी अलौकिक सुन्दरता में चार चाँद लगा देता है। उनका सात्विक आहार उनके तन-मन को हल्का रखकर चरित्रवान बनने में मुख्य भूमिका निभाता है। आज के मनुष्यों का तामसिक भोजन न चाहते भी उन्हें चरित्र हीनता की ओर प्रेरित करता है। परन्तु ब्रह्माकुमारियों को पवित्र हाथों द्वारा बनाया गया ब्रह्मा भोजन उनके मन की कालिमा को धोता रहता है। शुद्ध भोजन से उनके मन में शुद्ध विचार आते हैं।

"विकारों पर सम्पूर्ण विजय उनका लक्ष्य है"

सभी विकारों के मूल काम महाशत्रु को जड़ से उखाड़ फेंकना तो उनका परम ध्येय है ही·····परन्तु साथ-साथ अन्य विकारों का समूल नाश कर देना भी उनका लक्ष्य है। उनके सत्संग में प्रतिदिन क्रोध न करने की, मृदुभाषी बनने की, शिक्षा दी जाती है। अनुचित तरीकों से कमाया गया धन सुखदायी नहीं होता---यह वहाँ सिखाया जाता है। मोह-ममता दुःखों का कारण है व अंहकार मनुष्य को पतन की ओर खींचता है, आलस्य की कब्र से सभी सद्गुण लोप हो जाते हैं·····आदि आदि शिक्षाओं से वहाँ रोज़ ही आत्माओं का शृंगार किया जाता है। रोज़-रोज़ सुनकर तो धारणा अवश्य ही होती है जैसे कहावत प्रसिद्ध है "करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।" परन्तु हमारे भारत में कहाँ आज ऐसे सत्संग होते हैं जहाँ इस प्रकार चरित्रवान बनने की प्रेरणा प्रतिदिन मनुष्य को दी जाती हो। अगर कहीं कभी-कभी सत्संग होता भी है तो वहाँ केवल कथा सुनाकर मनुष्य के मन को बहलाकर समाप्ति कर दी जाती है जिसका क्षणिक प्रभाव भी कलियुग की कालिमा में विलीन हो जाता है। ब्रह्माकुमारियों की चरित्रगत-उन्नति का मूल कारण वहाँ का प्रतिदिन का ज्ञान योग का अभ्यास है जो उन्हें उनके विकारों को सम्पूर्णतया जीतने के लक्ष्य की ओर तीव्रता से ले चलता है।

"वे अपनी शक्तियों का सदुपयोग करती हैं"

वे अपने तन-मन व धन को ईश्वरीय कार्य में सफल करती हैं। चरित्रहीन मनुष्य का धन भी व्यर्थ जाता है, मन भी व तन भी। आज के संसार में अगर किसी मनुष्य को अधिक धन प्राप्त हो जाता है तो उनके कदम चरित्र-हीनता की ओर चलने लगते हैं। उनका मन दूषित होने लगता है, उनके मन में अंहकार समा जाता है। परन्तु ये देवियाँ, प्राप्त धन को स्वयं के लिए नहीं, वरन् आत्माओं के चरित्र उत्थान में उपयोग करने में अपना श्रेय मानती हैं। धन केवल साधन मात्र है। परन्तु श्रेष्ठ कार्य में उसका उपयोग मनुष्य को श्रेष्ठता की ओर ले चलता है।

चरित्रहीन मनुष्यों के मन में दूसरों के प्रति ईर्ष्या, द्वेष, ग्लानि, अपमान की भावनाएँ रहती हैं। जबकि चरित्र की प्रतिमूर्ति ब्रह्माकुमारियों का मन दूसरों के प्रति शुभ भावनाओं से ओत-प्रोत है। यहाँ पर घृणा व ईर्ष्या का त्याग सिखाया जाता है। क्योंकि ये दूषित कीटाणु ही मनुष्य के मन में अशान्ति व तनाव पैदा करने वाले हैं।

कहते हैं स्वच्छ मन में ही प्रभु बसता है यानि उसकी याद बसती है—यही ब्रह्मा वत्सों का उद्देश्य है। मुख या मन से किसी को भी दुःख न देने की श्रेष्ठ शिक्षा यहाँ पर प्रतिदिन दी जाती है। दूसरों को दुःख देने वाले कभी सुखी जीवन नहीं जी सकते, यह ब्रह्माकुमारियों के सुखी जीवन का एक सिद्धान्त है। सभी मनुष्यात्माओं की उन्नति हो, सभी के मन में

शान्ति हो, सभी सुखपूर्वक संसार में बसेरा करें यही इन चरित्र के अवतार देवियों की श्रेष्ठ भावना है।

योग अभ्यास द्वारा प्राप्त शक्तियों का प्रयोग भी ये मनुष्यों को शान्ति देने में ही करती हैं। अपनी सिद्धियों या वरदान का प्रयोग, संन्यासियों की तरह चमत्कार दिखाने या धन कमाने में करना इनका ध्येय नहीं। ये स्वयं को गुप्त रखकर विश्व की सेवा में प्राप्त शक्तियों का प्रयोग करती हैं।

"वे त्याग व तपस्या की प्रतिमूर्ति हैं"

संसार के वैभवों से इन ब्रह्मा वत्सों ने अपना मुख मोड़ लिया है। वैभवों से भी बहुत अधिक आकर्षण उन्हें ईश्वरीय प्राप्ति में है। उनका त्याग संन्यासियों की तरह अपना सब कुछ छोड़ जंगल में जाकर महल बनाने जैसा नहीं है। बल्कि संन्यासियों से भी श्रेष्ठ है। संसार में रहते हुए सर्व आकर्षण व साँसारिक सुखों व वैभवों का मन से त्याग है। उनका त्याग ही उनकी तपस्या की नींव है। कुछ मनुष्य उनके अच्छे रहन-सहन को देखकर उनको त्यागी व तपस्वी नहीं समझते·····ये उनके दृष्टिकोण के कारण है। इनका त्याग दिखावे का नहीं वरन् अति-सूक्ष्म है। उनकी तपस्या अग्नि तपस्या नहीं बल्कि मन को योगाग्नि में स्वच्छ करने वाली है। उनकी समीपता से उनकी सादगी को यथार्थ रूप से आँका जा सकता है।

"वे मानवता से सच्चा प्रेम सिखाती हैं"

परमपिता परमात्मा व प्रजापिता ब्रह्मा की अनादि सन्तान होने के कारण हम सभी आपस में भाई बहन हैं।·····वे इस दृष्टिकोण को अपनाती हैं। उनका विश्व में और कोई भी नाता नहीं है। उनके पास ऊंचे-नीचे, धर्म, गरीब अमीर का भेद भाव नहीं है, सभी आत्माएँ एक ही परमात्मा की सन्तान हैं।·····यह भावना रखते हुए वह मानव को सच्चा प्रेम सिखाती हैं और सम भाव रखने पर ज़ोर देती हैं।

"उनके मन में किसी से विरोध नहीं है"

यद्यपि अनेक मनुष्य उनके जीवन पर लांछन लगाते हैं, अनेक विद्वान उनके सिद्धान्तों को कल्पना समझकर उनकी ग्लानि करते हैं अनेक संन्यासी उन्हें हिन्दु धर्म का शत्रु कहकर आग उगलते हैं, परन्तु उनके मन की शीतलता कभी भंग नहीं होती। ज्ञान के गुह्य राज़ों को जानने के कारण वे अपने को अडोल रखती हैं और ग्लानि करने वालों के भी उत्थान को कामना करती हैं और यही कारण है कि विरोधियों को भी उनके आगे झुकना पड़ रहा है और वे इस कलियुगी अंधेरी रात में चमकते सितारों की तरह चमकती जा रही हैं। उनका प्रकाश विश्व के अंध-कार को दूर करता जा रहा है और निःसंदेह शीघ्र ही वे जग को प्रकाशित करके छोड़ेंगी।

"उनके सामिप्य से चरित्रवान बनो"

चरित्र मनुष्य की अमुल्य निधि है। इस चरित्र को खोकर धन प्राप्त करके भी आज मनुष्य व्यथित व अशांत है। अतः उन प्राणियों से जो चरित्र के महत्व को जानते हैं, हमारा नम्र निवेदन है कि इन अवतरित देवियों से मार्ग प्रदर्शना ग्रहण करके अपने जीवन को चरित्रता की श्रेष्ठ राह पर मोड़ दें और अपने श्रेष्ठ चरित्र के बल से इस पवित्र भूमि भारत में फिर से श्रेष्ठता की स्थापना करें ताकि मानव इस भूमि पर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सिद्धान्त अपना कर सुख की श्वाँस ले सकें। ☐

रावण अभी मरा नहीं, रावण के दस शीष ५ विकार नर में और ५ विकार नारी के प्रतीक हैं इसे ज्ञान-योगाग्नि से भस्म कीजिये

सच्ची दीपावली

ब्र० कु० पुष्पा, करोलबाग नई दिल्ली

क्या आपने कभी विचार किया है कि श्री लक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रति वर्ष दीपमाला जला कर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है ? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी क्यों हमसे रूठ गयी हैं ? जलते हुए दीप उनको आकृष्ट क्यों नहीं कर पाते ? वे कौन-सा दीप जलाना चाहती है ? वस्तुतः आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य का अन्तरतम तमसाच्छन्न है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है ? लेकिन कितनी विडम्बना है कि आत्म-दीप प्रज्ज्वलित कर कमल पुष्प सदृश अनासक्त बन कमलासीन श्री लक्ष्मी का आवाहन करने की जगह हम मिट्टी के दीप जला कर बच्चों का खेल खेलते रहते हैं। मन-मन्दिर की सफ़ाई करने की जगह बाह्य सफ़ाई से ही हम खुश हो जाते हैं। तभी तो श्री लक्ष्मी हमसे रूठ गयी हैं। कमल सदृश बन कर हम कमला को प्राप्त कर सकते हैं।

अमावस्या की काली रात्रि की तरह आज चतु-र्दिक घोर अज्ञान अन्धकार छाया हुआ है। कहीं कुछ सूझ नहीं रहा है। मत मतान्तर के जाल में मानव मात्र भ्रमित है। सभी आत्माओं की ज्योति बुझ चुकी है। ऐसे समय में सदा जागती ज्योति निराकार परमपिता परमात्मा शिव सर्वात्माओं की ज्योति जगाने के लिए कल्प पूर्व की भाँति इस धराधाम पर अवतरित हो चुके हैं और प्रायः लोप गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। निर्विकारी बन उस सदा जागती ज्योति से अपनी आत्मा का दीपक जगा कर ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हैं। तब ही इस देवभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना होगी जहाँ रत्न जड़ित स्वर्ण महल होंगे और घी-दूध की नदियाँ बहेंगी। इस युगान्तरकारी घटना की पावन स्मृति में ही हम दीपावली का त्यौहार मनाते हैं। इस अवसर पर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीप जलाया जाता है और उसी से अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी देवता के मन्दिर में सदा दीप नहीं जलता है लेकिन आज भी भगवान् विश्वनाथ के मन्दिर में अनवरत दीप जलता रहता है क्योंकि एक मात्र निराकार परमात्मा शिव ही सदा जागती ज्योति हैं।

निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ईश्वीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर जब हम निर्वि-कारी बनते हैं तो हमारा एक नया जन्म 'मरजीवा जन्म' होता है। हमारे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं तथा नये दैवी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध बनते हैं। इसी की स्मृति में व्यापारी इस दिन पुराने खाते को बन्द कर नया खाता खोलते हैं। अवढर दानी, भोलानाथ भगवान् शिव के साथ व्यापार करने वाले आध्यात्मिक साधकों का परम कर्त्तव्य है कि अब वे आसुरी अवगुणों का खाता बन्द कर दैवी गुणों के लेन-देन का खाता खोलें जिससे आगामी सतयुगी सृष्टि में वे श्री लक्ष्मी का वरण कर सकें।

दीपावली के दिन जुआ खेलने का बहुत महत्व है। कहते हैं कि जो इस दिन जुआ नहीं खेलता है उसकी अधम-गति होती है। इसका भी गम्भीर आध्यात्मिक रहस्य है। जुआ में कुछ सम्पत्ति हम दाव पर लगाते हैं जो कई गुना होकर हमें मिलती है। पावन सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि की स्थापनार्थ जब पतित पावन परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं तो वे हम जीवात्माओं को आदेश देते हैं कि अपने कौड़ी तुल्य तन-मन-धन को ईश्वरीय

सेवा में लगा दो तो २१ जन्मों के लिए तुमको कंचन काया, सतोप्रधान मन और अखुट धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। धन्य हैं वे नर-नारी जो इस कल्याण-कारी पुरुषोत्तम संगम युग पर ऐसा ईश्वरीय जुआ खेलते हैं। बाकी तो सभी 'विषय-सागर' में गोता खाने वाले अधम और पशु-तुल्य हैं।

दीपावली के आध्यात्मिक रहस्यों को न जानने के कारण आज मनुष्य उसे सामाजिक उत्सव के रूप में ही मानते हैं और महान् आध्यात्मिक उन्नति से वञ्चित रह जाते हैं। यहाँ यह ईश्वरीय जुआ और कहाँ वह स्थूल जुआ जिसके कारण कितने लोगों को जेल की यातना सहनी पड़ती है।

आइये ! अब हम प्रतिज्ञा कर कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन मन्दिर की सफ़ाई कर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव में आत्मा की ज्योति प्रज्ज्वलित करेंगे, आसुरी अवगुणों और संस्कारों का खाता बन्द कर दैवी गुण सम्पन्न बनेंगे तथा अपने तन-मन-धन को मानव मात्र के आध्यात्मिक उत्थान में लगा देंगे। फिर तो इस पुण्यभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना हो जायेगी जहाँ दुःख-अशान्ति का नामोनिशान भी नहीं रहेगा। शेर-बकरी एक घाट पर जल पियेंगे और अखुट धन-सम्पत्ति से नर-नारी मालामाल हो जायेंगे। इतना महान् अन्तर है मिट्टी के जड़ दीप जलाने और चैतन्य आत्मा की ज्योति प्रज्ज्वलित करने में। ▭

उदयपुर मादड़ी औद्योगिक क्षेत्र में औद्योगिक शान्ति प्रदर्शनी का उद्घाटन डिस्ट्रिक्ट इंडस्ट्रीज़ में ज्वांयट डारैक्टर भ्राता ए० बी० लाल कर रहे हैं। ब्र० कु० भाई बहन साथ में खड़े हैं

जबलपुर सेवा केन्द्र द्वारा चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन जबलपुर नगर निगम के महापौर भ्राता नारायण प्रसाद दुबे करते हुए। साथ में ब्र० कु० कमला, चित्रा, डा० रमेश चन्द्र मिश्रा, जौहरजी तथा अन्य।

नारी की आवाज

ब्र० कु० भारती, इन्दौर

(कस्तूरबा गांधी नैशनल मैमोरीयल ट्रस्ट, इन्दौर द्वारा आयोजित "स्त्री शक्ति जागरण" परिसंवाद में वक्तव्य)

विश्व की लगभग आधी जनगणना महिलाओं की है। अतः विश्व कल्याण हेतु जो भी योजना बनाई जाती है उसमें महिलाओं के कल्याण का विषय भी मुख्य माना जा रहा है। वास्तव में किसी भी सामाजिक और नैतिक कार्यक्रम को अन्तर्राष्ट्रीय मानना ही न्यायसंगत नहीं, यदि उसमें महिलाएं शामिल न हों अथवा उनका बहिष्कार कर दिया गया हो। फिर यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगा कि कोई भी कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता यदि नारियां उसमें सम्मलित न हों।

नारी के लिए यह ठीक ही कहा गया है कि "यही वे हाथ हैं जो झूला झुलाते हैं", और यही वो हस्तियां हैं जो विश्व पर राज्य करती हैं, क्योंकि बच्चों के प्रथम वर्षों में माँ के व्यक्तित्व की ऐसी छाप पड़ती है जो बहुधा उनके जीवन की गहराई में बैठ जाती है। नारी संस्कृति की निर्माता है, जननी है, उसके हाथ में जीवन है, वह उसे जिस रास्ते पर चाहे लगा सकती है। व्यक्ति कैसा भी हो उसमें माता की छाप अवश्य नज़र आती है। इसलिये माता को 'प्रथम गुरु' कहा जाता है। वह बच्चे को महान से महान शिक्षा देकर उच्च कोटि का व्यक्ति बना सकती है। और दूसरी तरफ बच्चे की बुराइयों को छिपाकर चोर, डाकू भी बना सकती है।

यदि हम भारत के प्राचीन साहित्य का अध्ययन करें तो हम देखेगें कि उसमें नारी की निंदा ही नहीं वरन् उसमें महानता का वर्णन भी है। नारी की महानता का वर्णन उच्च कोटि के नेताओं ने भी किया है। तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने बड़े ही यथार्थ रुप से वर्णन किया कि हिन्दु नारी इतिहास में सदैव कष्ट सहने को आश्चर्यजनक शक्ति और घृणास्पद पतियों से भी प्रेम करने की अद्भुत योग्यता दिखाती है, एक नारी पुरुष से सदा बेहतर रही है परन्तु हिन्दु पति अपने को श्रद्धा एवं योग्यता के काबिल कभी भी सिद्ध नहीं कर सका। महात्मा गांधीजी ने भी कहा था—"नारी को अबला कहना उसका अपमान करना है। अगर ताकत का मतलब पाशवी से है तो निःसन्देह पुरुष की अपेक्षा स्त्री में कम पशुता है परन्तु अगर इसका मतलब नैतिक शक्ति से है तो अवश्य ही पुरुष की अपेक्षा स्त्री अधिक शक्तिशालिनी है।"

हमारा भारत एक ऐसा देश है जहाँ अनेक अवसरों, उत्सवों व देवमंदिरों में अनेकानेक नारी रत्नों की पूजा की जाती है। सफल एवं सुखी जीवन व्यतीत करने के लिये ज्ञान शक्ति एवं वैभव आदि की आवश्यकता होती है, इन इच्छाओं की पूर्ति हेतु सरस्वती दुर्गा एवं लक्ष्मी की पूजा की जाती है। देवमंदिरों में श्रीनारायण के साथ लक्ष्मी, श्रीराम के साथ सीता आदि को दिखाया जाता है। इन सब बातों से स्पष्ट है कि दैव युग में नारी जाति को कितना श्रेष्ठ एवं पूज्यनीय स्थान प्राप्त था। इसलिये गायन भी है—"हुकम सरकार का, राज्य रानी का।"

किसी देश अथवा जाति की संस्कृति क्या है ? क्या थी ? यह वहाँ की नारी जाति की अवस्थाओं से आँका जाता है। तभी कहा भी जाता है "यत्र नारीस्तु पूजन्ते, रमन्ते तत्र देवता:" अर्थात् जिस घर में नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। हमारे देश की आदि से गौरवशाली परम्परा रही है, तभी इस देश की महानभूमि को देवताओं की जन्मभूमि होने के कारण इसकी महानता की तुलना भी माताओं से की गई है और इसीलिये भारतमाता कहकर सम्बो-

करते हैं। पतित पावनी मानी जाने वाली गंगा, यमुना, नर्मदा, सरस्वती आदि नदियों को भी स्त्री नामकरण से सुशोभित किया गया है। क्या यह नारी की महानता का द्योतक नहीं हैं ? यही नहीं, नारी ने हर क्षेत्र में पुरुषों से कन्धा-से-कन्धा मिलाकर कार्य किया है। अगर आप समाज सेवा के क्षेत्र में देखें तो नर्स फ्लोरेंस नाइटिंगेल की मिसाल सामने है। इसी प्रकार गरीबी व पिछड़े वर्गों की, रोगियों की सेवा के लिये मदर टेरैसा का नाम प्रसिद्ध है। अगर इतिहास के पन्ने पलटेंगे तो वीरांगनायें, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, दूसरी तरफ महारानी दुर्गावती का नाम उल्लेखनीय है। न्याय व धर्म की रक्षा हेतु महारानी अहिल्याबाई ने अपने पुत्र को भी सजा से वंचित नहीं किया। राजनीति में भी नेता के रूप में अनेक विदुषी, बुद्धिमान नारियाँ मुख्य पार्ट अदा कर रही हैं, जो आपको विदित ही हैं। जहाँ स्त्री का एक उज्ज्वल व श्रेष्ठ श्रद्धाभरा स्वरूप शास्त्रों व धर्मग्रन्थों में वर्णन किया गया है उसी जगह रचनाकारों ने निंदनीय रूप का वर्णन भी किया है। जैसे शंकराचार्य ने नारी को 'नर्क का द्वार' कहा है। कबीरदास जी ने कंचन और कामिनी को स्वर्ग प्राप्ति में बाधक बताया है। तुलसी दास ने नारी का चरित्र-चित्रण आदर्श रूप में किया परन्तु साथ-साथ नारी को निम्न श्रेणो में रखते हुए कहा—'ढोर, गँवार, शूद्र और नारी, सकल तारका के अधिकारी'। अन्य लेखकों ने भी शराब के साथ सुन्दरी को भी महाविनाश का कारण बताया है।

जिन पुरुषों ने नारी की ग्लानि की है उन्होंने नारी के प्रति अपनी बुद्धि का निम्नतर स्तर प्रगट किया है। क्या वे किसी माँ के पुत्र नहीं थे ? हाँ किसी नारी विशेष के प्रति अपवाद हो सकता है किन्तु मात्र एक की ग्लानि के लिये सम्पूर्ण नारी जगत की निन्दा —ऐसा ही कृत्य है जैसे मुख ऊँचा करके थूकना।

आखिर समय चक्र ने समयानुसार संसार को नारी बोध करवाया और इसी संदर्भ में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारतवर्ष में नारी जाति के पुनरुत्थान पर गंभीरतापूर्वक विचार किया गया। क्योंकि मध्यकाल में धार्मिक, ऐतिहासिक व सामाजिक कारणोंवश नारी की अवस्था काफ़ी निम्न स्तर पर पहुँच गई थी। सदियों की गुलामी व अशिक्षा तथा पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियों ने उसे पंगु और मूक बना दिया था। मध्यकाल में अपनी पीढ़ी द्वारा मध्य में लटका दिया, उसे कहीं का न रखा। उसी के परिणाम स्वरूप आज के मनुष्य की स्थिति भयावह है। नारी अपनी राह से भटककर बहुत दूर निकल गई है। काँटों के जंगल की ओर तथा पुरुष वर्ग का एक बहुत बड़ा हिस्सा वासना का पुतला बन अपने पौरुषिक परिभाषा को खो चुका है। आये दिन समाचार पत्रों में छपने वाले 'बलात्कार' शब्द को आज की दुनिया अपनी दिनचर्या में शामिल कर चुकी है। और पवित्रता, ब्रह्मचर्य, दिव्यगुण मात्र शब्दकोश में शब्द बनकर रह गये हैं। और शायद वहाँ भी वे अपने अस्तित्व के लिये संघर्षशील हैं। पिछले दिनों एक स्केन्डैन-वियन देश में जो सर्वेक्षण किया गया उसमें यह निष्कर्ष निकाला वहाँ एक भी कुँवारी कन्या नहीं है। आज की नारी को विषय-गुड़िया के रूप में व्यापारी वस्तु मानकर उद्योग चलाये जा रहे हैं। नारी की देह विज्ञापन व्यवसाय का मूल आधार बन चुकी है। उपन्यास, सिनेमा, पोस्टर, सौन्दर्य प्रसाधन से लेकर शराब सिगरेट के विज्ञापन में भी आज नारी-देह के चित्रों बिगर सूने माने जाते हैं। पाश्चात्य देशों की तरह यहाँ कैबरे नृत्यों का रिवाज ज़ोर पकड़ रहा है। आज मनोरंजन के नाम पर चल-चित्रों ने अभिनेत्रियों का अभिनव से परे भद्दा प्रदर्शन वर्तमान युग की तमोप्रधानता का सूचक है लेकिन यह आदतन होता जा रहा है, अश्लील लगता ही नहीं। तामसिक बुद्धि सही निर्णय भी नहीं कर पाती और तो और इस तामसी बुद्धि की तीव्रगति देखो—नित्य नई खोजें की जा रही हैं नारी के देह प्रदर्शन के तौर-तरीकों की—विश्व सुन्दरी प्रतियोगिता, भारत सुन्दरी प्रतियोगिता क्या है ? मात्र देह प्रदर्शन। काव्य में भी कवियों के लिये नारी देह के अंगों की महिमा के राग अलापे जाते हैं। और तो और ऐसी प्रशंसा की भूखी नारी अपना 'प्रेयसीभाव' प्रकट कर आग में घी डालने का काम कर रही है।—बागड़ू खुद ही खेत खा रही है।

भल आज इसका विरोध धीरे-धीरे उठ रहा है। नारी जाति में कुछ जागरण की तरफ़ उठी है किन्तु व्यावहारिक रूप में वह अपने मूलभूत रूप से वंचित है। क्योंकि आज भी हमारा समाज पुरुष-प्रधान है। हम देखते हैं कि आजकल नारी उद्धार, नारी जागरण, नारी मुक्ति, नारी उत्थान आन्दोलन जैसे शब्द ज़ोर शोर से अक्सर सुनने में आ रहे हैं। भल शिक्षा जागरण और नारी के आन्दोलित रुख के कारण नारी को समता तथा स्वतंत्रता के अधिकार मिले भी हैं, किन्तु नियम या अधिकार हो जाने मात्र से जीवन संतुलित नहीं हो जाता और असंतुलित दिशा, विरोध के फलस्वरूप ही आज यह देखने में आ रहा है कि धीरे-धीरे घर परिवार टूट रहे हैं और पारिवारिक जीवन का गठन ही समाप्त होता जा रहा है।

पुनः वही प्रश्न चिह्न सवालों को समाये मुंह बांये खड़ा है। उसके सामने खड़ी है निराश, निरही नारी बेचारी। क्या इन आन्दोलनों, इन सभाओं, नियमों, अधिकारों से नारी जाति का पुनरुत्थान सम्भव है। जबकि पुरुष वर्ग आज भी नारी को मात्र भोग्या समझ भोग रहा है। उसके वासनात्मक दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन नहीं है। तो क्या एक हाथ से ताली बज जावेगी ? ताली तो नहीं, चुटकी अवश्य बज जावेगी और ये आन्दोलन सभायें क्या हैं, चुटकी मात्र तो हैं।

तो सर्वाधिक विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि आज आवश्यकता है पुरुष और नारी के एक-दूसरे के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तन की और दृष्टि का यह परिवर्तन हर कोण से जरूरी है। यह परिवर्तन स्वच्छ नैतिक मूल्यों की स्थापना तथा देह के आकर्षण से परे पवित्र आत्मिक दृष्टिकोण के स्थापित आधार से ही सम्भव है। जिसके लिये आवश्यक है स्वयं सर्वोच्च धारणा स्वरूप मार्गदर्शक की जिसमें संगठन क्षमता का विशेष गुण हो। साथ ही आवश्यक है ऐसी शिक्षा की या कहे अब किताबी ज्ञान नहीं, ज्ञान-विज्ञान नहीं बल्कि सम्पूर्ण आध्यात्मिक शिक्षा की, क्योंकि 'आध्यात्म' शब्द का उपयोग आजकल केवल धर्म के अर्थ में ही किया जाता है जो कि बिल्कुल गलत है। वास्तव में 'आध्यात्म' शब्द का व्यापक स्वरूप है जिसमें धर्म के साथ-साथ कर्म की प्रधानता का पूर्ण प्रावधान है और धर्म कर्म का सही और सच्चा मेल विश्व की हर गतिविधि को अपने अन्दर समाये हुए है।

अतः निश्चय के साथ कह सकते हैं कि सिवाय आध्यात्मिक शिक्षा के और कोई मार्ग ऐसा है ही नहीं जिसमें 'उत्थान' सही अर्थों में समाहित हो और यही शिक्षा नारी और पुरुष के मध्य विचारों के द्वन्द्व की गहरी खाई पाट उसे समतल कर एक-दूसरे के प्रति समन्वय और सहानुभूति (सह-अनुभूति) के साथ-साथ ईश्वरीय अनुभूति के भाव पैदा कर और साथ मिलकर 'आश्रम' से बिछड़े 'गृहस्थ' को पुनः 'गृहस्थाश्रम' की पवित्र स्थापना का सर्वोच्च कार्य कर हमारी अपेक्षाओं को मूर्तरूप प्रदान कर सकेगी।

फिर ? फिर कौन है वो ? इस बार का प्रश्न चिह्न हमारे अन्दर उत्सुकता, जिज्ञासा और हमारी ज्ञान पिपासा को उभार रहा है और यही उभार उभरते-उभरते उस ऊँचाई को छू लेगा जहाँ वो अर्थात् सर्वोच्च, सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट, सर्व का सहारा सर्व से न्यारा, सर्व का प्यारा परमपुनीत, पतित-पावन पिता परमात्मा है।

और मुझे बड़ी ही सुखद अनुभूति होती है यह लिखते हुए कि इस लेख अथवा इन विचारों का उद्देश्य यह कदापि नहीं कि मैं अपने विचारों अथवा अपनी कलम की कथनी को कागज़ पर व्यक्त कर मात्र इस आयोजन में सम्मलित होऊँ और स्वयं की श्रेष्ठता को वाकपटुता अथवा कलमचातुर्यता के दम पर सिद्ध कर प्रदर्शित करूँ या अपने तर्कों द्वारा अपनी संस्था का प्रतिनिधित्व कर उसके प्रचार का कार्य करूँ, बल्कि सुखद अनुभूति का आधार यह कि मैं स्वयं उस निराकार परमपिता परमात्मा के दिव्य सन्देश को प्राप्त कर आप तक पहुँचाने की निमित्त बन रही हूँ। जिसे मात्र नारी जाति ही क्या सम्पूर्ण विश्व का पुनरुत्थान होकर नव-निर्माण होने जा रहा है। तो यह कहते मुझे गौरव का अनुभव होगा कि 'उत्थान' शब्द को सार्थक कर मंजिल तक पहुंचाने वाला 'आध्या-

त्मिक शिक्षा' सिवाय उस ज्ञान के सागर, परम शिक्षक, परम सद्गुरु परमात्मा के कोई उसकी ए बी सी डी भी नहीं बता सकता और वर्तमान समय स्वयं सर्वशक्तिवान पिता परमात्मा जो कि आध्यात्मिक शिक्षा से नारियों को कामिनी के बजाय कल्याणी, अबला से शक्ति स्वरूप बनाकर स्वयं के तथा सर्व के दुश्मन काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार आदि का संहार कर विजयी बनने की शिक्षा दे रहे हैं।

मान्यता भी है कि नारी में सर्वाधिक सृजनात्मक शक्ति होती है जिसको स्वयं ही सही दिशा प्रदान कर भगवान शिव ब्रह्मा तन के माध्यम से ज्ञान गंगा प्रवाहित कर ज्ञान संतान की उत्पत्ति से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना के विस्तृत माध्यम से सही दिशा प्रदान कर रहे हैं। जिससे नारी की सृजनशक्ति उसे शिवशक्ति होने का बोध करा रही है और वही पीड़ित नारी यह शिक्षा पढ़कर स्वयं सम्पूर्ण धारणामूर्ति बन और विश्व की अनेक आत्माओं को आध्यात्मिक शिक्षा का पाठ पढ़ाकर उनकी पीड़ा हर रही है। ऐसी शिक्षा जिसके पहले पाठ में ही इस बात का व्यवहारिक अभ्यास कराया जाता है कि विश्व की हर एक आत्मा अपने अविनाशी स्वरूप में ज्योति बिन्दु है और दूसरी सभी मनुष्य-आत्मायें भी ऐसी ही हैं। अतः आत्मा अपने मूल स्वरूप में भाई-भाई हैं, चाहे शरीर रूपी वस्त्र स्त्री का है या पुरुष का। आत्मा प्रकृति की अपेक्षा में 'पुरुष' रूप ही है, अतः आत्मा के स्त्री होने की बात ही कहाँ बची ? आत्मिक दृष्टि से तो सभी प्रकृति से भिन्न पुरुष ही हैं तथा एक ही पिता परमात्मा की सन्तान होने के नाते भाई-भाई ही हैं। चूंकि आ सृष्टिरूपी रंगमंच पर अपना पार्ट निभाने के निमि शरीर धारण करती है। अतः साकारी देह की भिन्नता के दृष्टिकोण से और एक पिता के बच्चे होने के कारण स्वतः भाई-बहन का पवित्र रिश्ता कायम होता है और वही स्वरूप व्यवहारिक जीवन में धारण कर इस संस्था के भाई बहन परस्पर समन्वय और सहयोग से आगे बढ़ते हुए विश्व-कल्याण के मार्ग पर तीव्रगति से कदम बढ़ा रहे हैं। यह ईश्वरीय संस्था ही एक मात्र ऐसी संस्था है जिसका सम्पूर्ण संचालन स्वयं परमपिता परमात्मा के निर्देशन में नारियों द्वारा अत्यन्त ही सफलतापूर्वक किया जा रहा है। यह विश्व-विद्यालय संसार में व्याप्त झूठ, बेईमानी, धोखा, भ्रष्टाचार, अत्याचार, चरित्रहीनता, वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा और भावी विश्व युद्ध की भयंकर विभिषिका को खत्म करने के लिये आमूल परिवर्तन की दिशा में आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा द्वारा सृष्टि की मूल आधार नारी जाति में आध्यात्मिक क्रान्ति जगा रहा है जिसमें हजारों नारियाँ अपनी पवित्रता, शुद्ध आचरण, व्यवहार और श्रेष्ठ चरित्र की अमूल्य नीधि के सर्वश्रेष्ठ खजाने द्वारा तथा अमूल्य ज्ञान रत्नों का दान कर विषय-विकारों की झौपड़पट्टी में फंसी, ज्ञानधन के अभाव में निरन्तर निर्धन होती आत्माओं की गरीबी दूर करने की महान इंकलाबी क्रान्ति की ध्वजवाहिनी के रूप में आत्म स्वरूप की सर्वोच्च शान में विश्व-कल्याण हेतु विश्व-परिवर्तन के मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ रही है। आइये आप भी सहयोग दीजिये।

सादगी

ले०—ब्र० कु० मनोज अग्रवाल, गुमला (बिहार)

अपना ढंग बनाओ सादा
तड़क-भड़क में पड़ो न ज्यादा
खाना सादा, पीना सादा
इस दुनिया में जीना सादा
धोती सादा, कुरता सादा
नहीं दिखावा होवे ज्यादा
बरतन सादा, बिस्तर सादा
अन्दर बाहर सब घर सादा
खाना और पहनना सादा
जब तक जीना, रहना सादा
चलना फिरना भी हो सादा
मुँह से जो कुछ कहना, सादा
सबसे मिलना-जुलना सादा
फैशन में मत घुलना ज्यादा

'लास्ट सो फास्ट'

ब्र० कु० पवन, कलकत्ता

लकड़हारे ने अपनी गठरी नीचे रखकर प्यासी नज़रों से कुंए में झाँका। तो वह अपनी प्यास भी भूलकर आश्चर्य चकित हो गया, उसने देखा—एक सन्यासी जंजीरों के सहारे कुंए में उल्टा लटका हुआ है। उसने लोहे की मज़बूत जंजीरों से अपने पैरों को बाँधा हुआ है। श्राप के भय से भय-भीत होते भी लकड़हारे ने सन्यासी से पूछने का साहस किया—

"महात्मन्! आप यह क्या कर रहे हैं?"

सन्यासी बोले—"बेटा, भगवान से मिलने के लिए कठोर तप कर रहा हूं। मुझसे प्रसन्न होकर एक दिन भगवान अवश्य ही दर्शन देंगे।"

लकड़हारे ने जिज्ञासा भरी वाणी दोहराई—"क्या ऐसा करने से भगवान प्रसन्न हो जायेंगे?"

"हाँ—जब अपने भक्त को अधिक पीड़ामय देखेंगे तो भगवन से सहन नहीं होगा और वे दौड़े चले आयेंगे"—सन्यासी ने दृढ़ता से कहा।

लकड़हारा पानी पीना भूल गया और उसने सोचा कि मैं भी ऐसा ही करूंगा। और उसने घास की रस्सी बाँटी और उस ही कुँए पर एक लकड़ी रख कर उसमें रस्सी बाँध कर वह लटकने लगा।

परन्तु ज्यों ही वह लटका। रस्सी उसका बोझ झल न सकी और टूट गई। उसकी आँखें बंद हो गईं परन्तु अगले ही क्षण उसने अपने आपको भगवान की बाँहों में पाया। अब उसकी खुशी का पारावार नहीं था।

उसी क्षण भगवान ने उस सन्यासी को भी दर्शन दिये।

सन्यासी ने प्रभु से प्रश्न किया?

"मैं इतने दिन से तपस्या कर रहा हूं। मुझे आपने बहुत दिन बाद दर्शन दिये और उस लकड़हारे को अभी-अभी आपने अपनी बाहों में थाम लिया।"

प्रभु मुस्करायें। बोले—"भक्त, तुम पूरे इन्तज़ाम से कुंए में लटके थे, ताकि तुम गिर न सको। परन्तु वह लकड़हारा पूर्णतया मुझ पर समर्पण हो चुका था। उसने यह सोचा ही नहीं कि मेरा क्या होगा। इसलिए उसकी भक्ति श्रेष्ठ है। तुम में अपनेपन का मान था, वह सर्वस्व न्यौछावर कर चुका था।"

इसी प्रकार भगवान के पास अब अन्तिम समय में आने वाली आत्माएँ अगर अपनत्व का त्याग कर बाबा की याद में इतनी खो जाएँ कि उन्हें कुछ भी सुध बुध न रहे तो उनके आगे निकल जाने में कोई सन्देह नहीं। परन्तु जो ये सोचते हैं कि मेरा क्या होगा, जिन्हें बाबा पर पूर्ण विश्वास नहीं वे चाहे जितने समय से पुरुषार्थ कर रहें हैं, तीव्रवेगी नहीं बन सकते। अतः जो अन्त में आये भगवान के बच्चे विजयी रत्न बनना चाहें उन्हें पूर्ण रूप से स्वयं को स्वाह कर देना चाहिए।

गाजियाबाद (लोहिया नगर) सेवा केन्द्र का उद्घाटन करती हुई ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी जी। ब्र० कु० कमलेश, कमलमणि, हृदयमोहिनी जी तथा अन्य भाई बहन साथ में हैं।

तीसरे नेत्र की करामात

(ब्र० कु० कुसुम लखनऊ)

पाँच शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए सिर्फ एक को ही अपना मित्र बनाओ। ये शत्रु कितना भी तुमको हलचल में लाएं लेकिन तुमको तो अचल रहना है क्योंकि तुम तो अंगद समान हो। जिसके साथ सर्वशक्तिवान है वह तो डबल है तो उसके सामने माया सिर उठा नहीं सकती है। यदि ज्ञान, योग, धारणा और सेवा के संकल्प नहीं चलते हैं तो जरूर तुम्हारे ऊपर माया की छाया है, लेकिन है वह गुप्त रूप में, आप उसकी चैकिंग नहीं कर पा रहे हैं। जब हर सम्बन्ध से बाबा का साथ नहीं होता है जिस भी सम्बन्ध से बाबा को गैरहाज़िर करते हो, उसी रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिए माया को जगह मिल जाती है। फिर तो जहाँ बाबा हाज़िर नाज़िर होता है उसके बजाय माया हाज़िर नाज़िर हो जाती है। जिन कर्मेन्द्रियों से बाबा की झलक और फलक होनी चाहिए उन कर्मेन्द्रियों से माया के भिन्न-भिन्न रूपों की झलक आती है। जैसे आँखों में बाबा की जगह देहधारियों के रूप-रंग, स्वभाव, कपड़ा, मकान, धन, पद नौकरी आदि बस जाती है और उसके अवगुण देखने लगते हैं। इसके बजाय करना हमको यह है कि उस देह में भृकुटि के बीच में जो अविनाशी सितारा चमक रहा है, उस सितारे का रूप रंग स्वभाव को तीसरे नेत्र से देखने का प्रयत्न करो। उस आत्मा ने कौनसा वस्त्र पहन रखा है, किस देह रूपी मकान में उसका निवास है, वह ज्ञान रूपी धन से कितनो भर-पूर है, भविष्य में किस पद को प्राप्त करने वाली है, वह रूहानी नौकरी में कितनी व्यस्थ रहती है। "कई बार प्रयत्न और भूल के सिद्धाँत" का अटेंशन रखो। फिर तो आप एक दिन मीठे संकल्प में बंध ही जायेंगे कि मुझे देखना है तो उस भृकुटि के बीच में स्थित सितारे को ही देखना है फिर तुम्हारी आदत पड़ जायेगी। सर्व कर्मेन्द्रियों की राजा आँख को ही तो कहा जाता है। इस राजा को हमने यदि अपने कब्जे में रख लिया तो अन्य छोटी कर्मेन्द्रियाँ आपे ही सरेन्डर हो जायेंगी। जब आत्मा, आत्मा को ही देखने की अभ्यासी बन जायेगी तो आत्मा का पिता परमात्मा याद आना ही है।

यह आँख रूपी कर्मेन्द्रिय बहुत उद्दन्ड है। जब तीसरा नेत्र धूमिल हो जाता है यानी देह का पर्दा पड़ जाता है तब हर कार्य व्यवहार में ये चमड़ा-नैन आगे बढ़कर तीसरे नेत्र की दिव्य रोशनी को खत्म कर देते हैं। वैसे भी इस शरीर में चमड़ा नैन का स्थान तो नीचे ही है और दिव्य नेत्र का स्थान ऊपर है तब फिर ये विनाशी नेत्र क्यों उद्दन्डता करते हैं। कौनसी उद्दन्डता, यही कि देह को देखना और दिखाना। स्थान का भी तो ध्यान रखना है कि दिव्य नेत्र ऊपर और विनाशी नेत्र नीचे स्थित हैं। कहते हैं न कि शंकर ने तीसरा नेत्र खोला तो सारी दुनिया भस्म हो गयी। तीसरे नेत्र की दिव्य लाइट से इन नेत्रों की कालिमा समाप्त हो ही जानी है। लौकिक में भी आप देखते हैं ना जब अधिक पावर का बल्ब लगा देते हैं तो आँखें एक दम चौंधियाँ जाती हैं। इसी लिए तो कहते हैं—यदि ढीले पुरुषार्थी से तीव्र पुरुषार्थी बनना है तो तीसरे नेत्र के डायरेक्शन पर चलो।

—:o:—

देह-भान सभी विकारों की जड़ है, आत्म-निश्चय सभी गुणों की खान है

सूर्यमुखी

ले०—ब्र० कु० देवदत्त, भावनगर

इस लेख में सूर्य और सूरजमुखी के स्थूल प्रेम को लेकर आत्मा सूरजमुखी, परमात्मा सूर्य को किस प्रकार अपने प्रेम का आधार बना सकती है। इस बात को गीत की दो पंक्तियों का आधार लेकर स्पष्ट किया है।

तू सूर्य, मैं सूरजमुखी हूँ पिया।
देखूँ न तुझे तो खिले न यह जिया।।

सूर्य के उदय होते ही रात्रि का गहन तम दूर हो जाता है। सूर्यदेव के दृष्टिगत होने से पूर्व ही खगवृन्द नीड़ों से निकलकर महावित्तान में सुदूर उड़ान भरते हुए मधुर कलरव से प्रभात की पूर्व सूचना देते हैं। प्रकृति की समस्त वनस्पतियाँ पुष्पित-पल्लवित हो उठती हैं। गुलशन में चम्पा-चमेली और गेंदा तथा गुलाब जैसे सुमनों का मधुर हास नयनों को विश्रान्ति देता है और हृदयरूपी पुष्प को भी खिलने के लिए बाध्य करता है।

हर वस्तु की अपनी विशेष सत्ता है और उपयोग भी। मृग नाद पर रीझ कर अपने प्राण देता है, भंवरा कमल की नाल में बन्द हो जाता है, पतंगा आग में जल मरता है तो चकोर चाँद पर, मोर मेघ-मालाओं को निरख नाच उठते हैं लेकिन बेचारी सूरजमुखी ?

बस अपने प्रियतम सूर्यदेव को टकटकी लगाए निहारती ही रहती है। पृथ्वी की गति के साथ-साथ सूर्य की भी स्थिति बदलती है। अपने सर्वस्व के लिए, अपने पूज्य के लिए, अपने अराध्य के लिए सूरजमुखी भी मुख फेरती रहती है परन्तु सूर्य-महाराज अपने पथ पर आगे बढ़ते हैं। कितने नन्हें-नन्हें आशाओं के दीप वह बेचारी अपने मन में संजोये रहती है। पूरी-पूरी रात रुदन करती है, सूर्यदेव के प्राची में उदित होने तक अपने मन रूपी मयूर को एकाग्र किए रखती है। प्रातः ओस के रूप में झरते आँसू उसके मुख रूपी पंखुड़ियों पर देखे जा सकते हैं।

ज्यों-ज्यों सूर्यदेव के अस्ताचल पर पहुँचने का समय आता है त्यों-त्यों उस बेचारी का आभापूर्ण मुखमण्डल मुरझाने लगता है। उनके अदृश्य होने पर अपने सम्पूर्ण यौवन और रूप सौन्दर्य को समेटकर वह बेचारी सो जाती है। सम्भवतः अपने प्रियतम के सिवाए किसी का मुख देखना उसे पसंद नहीं। एक प्रियतम के बिना उसका सारा संसार ही उजड़ा है। सारी आस्था, यौवन और सौरभ तथा मधुरता उस एक के प्रति ही समर्पित है।

इतना त्याग करने पर भी तो उसे विरहाग्नि ही तो मिलती है। कहीं प्रियतम तो उसके पास दो घड़ी के लिए नहीं आते। वह घुटती रहती है, तड़पती और छटपटाती है। उनके अस्ताचल पर पहुँचने से पूर्व ही विरह की परछाईयाँ उस निस्वार्थी प्रेमिका के मुखमण्डल पर परिलक्षित होती हैं। बगिया के दूसरे फूल लहराते, इठलाते और अठखेलियाँ करते हैं तथा भ्रमरों के आगमन पर फूले नहीं समाते लेकिन सूर्यमुखी बेचारी को इतना समय ही नहीं जो उनके नाज़-नखरे देख सके।

उपरोक्त पंक्तियों की उपमा और उपमान कितने हृदयस्पर्शी हैं !

ओह ! हम आत्माएँ उस ज्ञान सूर्य (परमात्मा) के लिए भी तो जन्मों से टेर लगाए बैठी थीं। जब वह ओझल थे, अदृश्य थे, अविदित थे, तब भी तो

हमने उन्हें नहीं छोड़ा, वह संसार से परे परमधाम में थे लेकिन हमारे नयन तो उनकी छवि को कण-कण में, पत्ते-पत्ते में, हर कण में निहारने को आतुर थे। सीता लंका में होते हुए भी राम के ही करीब रही, रावण के नहीं, हर क्षण मनसा चक्षुओं से उसने राम को ही देखा, रावण को नहीं। हमने भी उसी प्रकार माया को, प्रकृति तथा तथाकथित शास्त्र मतों की झूठी प्रचलित मान्यताओं को, कर्मकाण्ड को, तथा पाप-ताप को उसी प्रियतम का उपहार ही तो माना न? चाहे उस प्रियतम परमात्मा की ग्लानि की, चाहे कलंक लगाए, लेकिन यह सब अज्ञानवश हुआ, उनसे दूर होने के लिए नहीं लेकिन उनसे मिलने के लिए मन के अंधेरे कोनों में भी तो कहीं न कहीं आशाओं के दीप टिमटिमाते रहे, उनकी याद में रोते भी रहे और मुस्कुराते भी रहे। थे तो अन्धकार में लेकिन खोज तो उजाले की ही थी। पूजा की तो जड़ता की ही लेकिन चेतन मानकर ही की। अनेक देहधारी रूपों में उसे प्राप्त करना चाहा। मीरा ने गिरिधर तो कबीर ने, तुलसी ने राम में उसे ढूंढ़ा, भले प्राप्ति कुछ भी न हुई लेकिन सूर्यमुखी की तरह हमने मन रूपी मुख को उसी ओर लगाए रखा जहाँ-जहाँ से उनके आगमन की कथाएँ सुनी थीं।

अब, जब वह प्रियतम हमारे मन रूपी मोर को आल्हादित करने आया है, अब जब अज्ञानरूपी निशा के समापन की उसने घोषणा कर दी है, जब अपने मिलन की घड़ियाँ भी निश्चित कर दी हैं तो हम आत्मा रूपी सूरजमुखियों का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि हम भी उस परमचेतन ज्ञान-सूर्य (शिव बाबा) की ओर टकटकी लगाए रहें, उसी के स्नेह के अश्रु-हार और ज्ञान व गुणों की पुष्पमाला गूँथें।

सूर्य और सूरजमुखी दोनों ही जड़ हैं, मूक हैं और प्रकृति के आधीन हैं, लेकिन हम आत्माएँ तो चेतन हैं, सक्रिय हैं और प्रकृति से परे हैं। इसी प्रकार हमारा प्रियतम भी ज्ञान का चेतन सूर्य है, जिसकी सुनहरी किरणों में पाप-ताप नहीं शान्ति और आनन्द है। सूरजमुखी की साधना तो सफल नहीं हुई लेकिन हमारी साधना के फलस्वरूप सर्व सिद्धियाँ, शक्तियाँ विद्याओं और कलाओं तथा दिव्यगुणों का दान देने के लिए प्रभु पिता परमात्मा अपना परमतत्व छोड़कर आए हैं। इसलिए हमें भी केवल उन्हें ही दिव्य-दृष्टि से देखना चाहिए, उन्हें देखे बिना, उनकी आज्ञा (श्रीमत) को माने बिना, उनकी वाणी को सुने बिना हमारा हृदय नहीं खिल सकेगा और न ही हम अतीन्द्रिय सुख का ही अनुभव कर सकेंगे। सूर्यमुखी जैसे सूर्य की उपस्थिति में ही अपने को धन्य समझती है, उसकी किरणों में पूर्णरूप से खिल उठती है, वैसे ही सांसारिक बन्धनों से ऊपर उठकर हमें भी परमप्रियतम ज्ञान-सूर्य शिव की हर आज्ञा को शिरोधार्य करना होगा तभी हमारा मन अन्तर्मन से गीत की उस पंक्ति को सुनते ही हर्षित हो उठेगा—

तू सूर्य, मैं सूरजमुखी हूँ पिया।
देखूं न तुझे तो खिले न यह जिया॥

□

कलकत्ता-कौन नगर सेवा केन्द्र के वार्षिक उत्सव के अवसर पर दादी निर्मल शान्ता के साथ, ब्र० कु० बिन्दु सौभाग्य, ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा, रमेश तथा अन्य भाई बहन बैठे हैं।

आध्यात्मिक सेवा-समाचार

(ब० कु० श्रीराम, कृष्ण नगर, देहली द्वारा संकलित)

मोदी नगर में चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक मेला

मोदी नगर में ३ से ११ अक्टूबर तक कालेज ग्राऊँड में चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। उद्घाटन पूर्व एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। इस मेले का उद्घाटन आदरणीय दादी प्रकाशमणि, प्रशासिका ब्र०कु० ई० बि० विद्यालय द्वारा सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह में भ्राता केदारनाथ मोदी, उद्योगपति मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उपस्थित वक्ताओं ने उद्योग नगरी में राजयोग की लहर आने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

मेले को देखने के लिए मोदीनगर तथा आस-पास के गाँवों की भीड़ उमड़ पड़ी। हज़ारों ने मेला देखा तथा सैकड़ों ने योग शिविर से लाभ उठाया। मेले के दौरान स्कूल के बच्चों के लिए वक्तृत्व स्पर्धा भी रखी गई। इस अवसर पर मेरठ विश्व-विद्यालय के उपकुलपति जी पधारे। बड़े उमंग उत्साह से बच्चों ने भाग लिया।

मेले के समाप्ति समारोह में आबू से विशेष आदरणीय ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी जी पधारीं। इस अवसर पर वहाँ के डिप्टी कमिश्नर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस मेले से मोदीनगर में एक आध्यात्मिकता की लहर फैली है। इस मेले की सफलता में विशेष गायत्री मोदी जी को बाबा ने निमित्त बनाया।

मथुरा में विश्व-शान्ति पथ प्रदर्शक मेला

मथुरा में १७ अक्टूबर से आध्यात्मिक मेला शोभा यात्रा से प्रारम्भ हुआ। इस मेले का उद्घाटन दीदी मनमोहिनी जी द्वारा सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह में चौधरी दिगम्बरसिंह, संसद सदस्य मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस मेले को हज़ारों भक्त देख रहे हैं।

नागपुर में विश्व शान्ति-सम्मेलन

नागपुर में २५ सितम्बर से त्रिदिवसीय विश्व-शान्ति सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में देहली से भ्राता जगदीश जी, कलकत्ता से दादी निर्मलशान्ता तथा रमेश जी, अमृतसर से दादी चन्द्रमणि जी, बम्बई से रमेश भाई तथा ऊषा बहन, प्रेम बहन, देहरादून से तथा अन्य वक्ता के रूप में पधारे।

एक शोभा यात्रा भी निकाली गई जिसमें नागपुर तथा आस-पास से पधारे लगभग ८०० भाई-बहनों ने भाग लिया। इस सम्मेलन का उद्घाटन आर्डिनेन्स फैक्ट्री, अबाझरी के महा प्रबन्धक के० नारायण तथा योग शक्ति दादी निर्मल शान्ता द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह में दादी निर्मल शान्ता जी ने "सुख दो सुख लो, पाँच विकारों पर विजय पाओ, शान्ति व आनन्द प्राप्त करो" यह सलोगन बुलन्द किया। अन्य वक्ताओं ने विश्व में शान्ति के लिये राजयोग द्वारा आध्यात्मिक क्रान्ति लाने की आवश्यकता पर बल दिया। इस सम्मेलन से हज़ारों लोगों ने शान्ति लाभ लिया।

लखनऊ (हज़रतगंज) सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि गत मास यहाँ पर "सर्व धर्म सम्मेलन" का आयोजन किया गया, जिसमें रोमन कैथोलिक चर्च, लखनऊ के प्रिस्ट फादर डिसूजा भी उपस्थित हुए। इस सम्मेलन का विषय था कि परमात्मा की पहचान से ही विश्व में एकता, सुख और शान्ति की स्थापना हो सकती है। 'फादर' ने प्रदर्शनी देखी तथा बहुत प्रभावित हुए और अष्ट शक्तियों का चित्र माँग कर लिया।

पठानकोट सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि यहाँ पर प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचनों के कार्यक्रम विभिन्न स्थानों पर रखे गए, जिनसे लगभग ८५०० आत्माओं को शिव पिता का संदेश दिया

जा चुका है।

पूना सेवाकेन्द्र से ब्र० कु० उर्मिला लिखती हैं कि यहाँ पर विशिष्ट व्यक्तियों का स्नेह मिलन रखा गया जिसमें लगभग ८० उच्चपदस्थ व्यक्ति शामिल हुए। सभी को संस्था की गतिविधियों से तथा परमात्मा के परिचय से अवगत कराया गया। अन्त में सभी को ब्रह्माभोजन कराया गया। यह समाचार दैनिक हिन्दी—"आज का आनन्द" समाचार-पत्र में भी प्रकाशित किया गया।

पटना सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि गतमास अपने वायदे अनुसार विहार के राज्यपाल भ्राता ए० आर० किदवई जी सेवाकेन्द्र पर पधारे तथा संग्रहालय का अवलोकन किया। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य मंत्री भ्राता ललितेश्वर प्रसाद शाही और बिहार विधान सभा के अध्यक्ष भ्राता राधानन्दन झा ने भी संग्रहालय का अवलोकन किया।

बड़ौदा सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि निकटवर्ती बाजवा गाँव में दो दिवसीय प्रदर्शनी रखी गई, जिससे १५०० आत्माओं ने लाभ उठाया तथा २५ आत्माओं ने राजयोग शिविर से अनुभव प्राप्त किया।

सिविल लाईन (कानपुर) सेवाकेन्द्र से ब्र० कु० गंगे बहिन लिखती हैं कि २४-९-८२ से २-१०-८२ तक आठ दिन के लिए भरथना तहसील में चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन इंटर कालेज की प्रिंसिपल महोदया ने किया। इस प्रदर्शनी से लगभग २०,००० आत्माओं ने तथा योगशिविरों से ७०० आत्माओं ने लाभ उठाया जिनमें ८० भाई-बहिन नियमित क्लास कर रहे हैं। प्रिंसिपल महोदया ने प्रभावित होकर अपने कालेज में भी प्रवचन करवाया, जिसे सभी छात्राओं तथा टीचर्स ने बड़े ध्यान से सुना।

उदयपुर सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि मादड़ी में औद्योगिक शान्ति प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन जिला उद्योग के संयुक्त निर्देशक भ्राता ए० वी० लाल जी ने किया। इस प्रदर्शनी से लगभग १५०० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

गोहाटी सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि शिलाँग में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन वहाँ के एम० एल० ए० भ्राता डी० एन० जोशी जी ने किया। प्रदर्शनी चार दिन के लिए लगाई गई थी परन्तु देखने वालों के आग्रह पर छः दिन तक चली, जिससे हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन में भी प्रवचन दिया गया जिसमें उपस्थित लगभग २००० प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने लाभ उठाया।

जयपुर सेवाकेन्द्र से ब्र० कु० कुन्ती लिखती हैं, यहाँ पर निर्वैर भाई के पहुँचने पर समाचार-पत्र-संवाददाताओं की कान्फ्रेंस बुलाई गई तथा बार एसोसिएशन का कार्यक्रम राजस्थान हाईकोर्ट में रखा गया जिसमें ७० वकील तथा दो जजों ने भाग लिया। लायन्स क्लब के सदस्यों ने भी निर्वैर भाई के स्वागत के उपलक्ष्य में एक सार्वजनिक सभा बुलाई जिसमें ७० सदस्य उपस्थित हुए। इसके अतिरिक्त अखिल जैन मिशन की ओर से आग्रह करने पर एक झाँकी निकाली गई। तथा प्रवचन भी दिया गया, जिस द्वारा लगभग ४००० आत्माओं ने शिव बाबा का परिचय प्राप्त किया। एस० एम० एस० हॉस्पिटल के ट्रेनिंग हॉस्टल में प्रोजैक्टर शो भी दिखाया गया।

नयागंज (कानपुर) सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि हरदोई, पिहानी, मझिया, बखरिया आदि गीता पाठशालाओं के संयुक्त प्रयास से हरदोई शहर में 'ज्ञान-योग प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन भ्राता बी० के० त्यागी, पशु चिकित्सा अधिकारी ने किया। इससे लगभग ३००-३५० आत्माओं ने पूर्ण लाभ प्राप्त किया।

हैदराबाद सेवाकेन्द्र की ओर से २८-८-८२ से ६-९-८२ तक विश्व-शान्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। २६-८-८२ को प्रैस-संवाद-दाताओं की कान्फ्रेंस बुलाई गई। २८-८-८२ को शोभा यात्रा निकाली गई तथा मेले के दौरान महिलाओं और न्याय वेत्ताओं के अलग-अलग सम्मेलन बुलाए गए।

६-९-८२ का समापन समारोह आदरणीया दीदी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस मेले से डेढ़ लाख आत्माओं ने तथा योग-शिविरों से ७०० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया। परिणाम-स्वरूप ५० नए विद्यार्थियों की क्लास आरम्भ हो गई है। २-१०-८२ को 'गाँधी ज्ञान मंदिर' में आयोजित 'चतुर्थ योग सम्मेलन' में 'राजयोग' विषय पर भाषण हुआ जिसमें अनेक योगाचार्यों तथा हठयोगी-शिक्षकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त कमलानगर में 'विश्व-नव-निर्माण' आध्यात्मिक प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिससे लगभग १२५ आत्माओं ने लाभ उठाया।

गोरखपुर से कमल बहन लिखती हैं कि पिछले मास गौण्डा, बढ़नी, नौगढ़ में प्रवचन प्रोजैक्टर शो किए गए। जिस से हज़ारों आत्माओं ने लाभ लिया। बस्ती में भी प्रोजैक्टर शो किया गया।

कोलहापुर से समाचार मिला है कि वहाँ ८ अक्टूबर को शोभा यात्रा निकाल कर २ दिन का "विश्व-शान्ति महोत्सव आरम्भ किया। ९-१० अक्टूबर को बम्बई से पधारे रमेश भाई, डा० गरीश, योगिनी बहन के प्रभावशाली प्रवचन हुए। डाक्टर्स, इन्जीनियर, वकील, जज, व्यापारी तथा अन्य सभी वर्गों के लिए कार्यक्रम रखे गए।

ढेंकानाल (उड़ीसा) में आबू पर्वत से ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा जी के पधारने पर एक नए राजयोग संस्थान का शिलान्यास उनके द्वारा स्थापित हुआ। □

मथुरा में विश्व शान्ति पथ प्रदर्शक मेले के उद्घाटन समारोह में मंच पर विराजमान हैं (बाएं से) ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी, मुख्य सम्पादक, प्युरिटी, ज्ञानामृत तथा वर्ल्ड रिन्युवल, दीदी मनमोहिनी जी अतिरिक्त प्रशासिका ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय, ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी, ब्र०कु० रत्न मोहिनी जी तथा चौ० दिगम्बर सिंह, संसद सदस्य।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, वी9/19 कृष्ण नगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया. Regd. No. 10563/65-D (E)—70